अध्याय– 4

व्यवहारवाद : एक परिचय

(Behaviouralism : An Introduction)

व्यवहारवाद : एक परिचय

(Behaviouralism : An Introduction)

विषय–प्रवेश

व्यवहारवादी संकल्पना (Behaviouralism concept) बीसवीं शताब्दी की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है जो राजनीति शास्त्रा की परम्परागत अध्ययन प्रकत्ति, प्रविधियों एवं विषय–वस्तु को राज्य एवं सरकार तक सीमित रखने की मानसिकता के प्रति गंभीर असंतोष का परिणाम हैं। यह राजनीति एवं समाज की अन्योन्यक्रिया एवं अन्योन्याश्रितता के अनुभूतिमूलक तथ्यपरक अध्ययन की एक खास विद्या है, जिसकी अध्ययन प्रवृत्ति राजनीति एवं समाज के बहुआयामी संबंधों का तात्विक आधार पर यथातथ्य अन्वेषण, अनुसंधान एवं अध्ययन–विश्लेषण करने का प्रबल पक्षधार है। सामाजिक पृष्ठभूमि में राजनीतिक यथार्थों का शोधपरक अध्ययन करने वाली यह एक विशेष प्रवृत्ति है जो राजनीति के अध्ययन को सीध तोर पर समाज से जोड़ती है। इस संकल्पना की यथार्थवादी प्रवृत्ति की वजह से राजनीति प्रासांगिक शोधाकार्यों को एक नई दिशा, एक नया यर्थाथपरक आयाम मिला है। वस्तुतः, आधनिक राजनीति विज्ञान का आधार आधय है व्यवहारवादी संकल्पना जिसका मूल लक्ष्य राजनीतिक सरोकारों को सामाजिक सरोकारों से जोड़कर राजनीतिक मनष्य क राजनीतिक व्यवहार का अध्ययन–विशलेषण सामाजिक पृष्ठभूमि के आलोक करना है। व्यवहारवादी अपने शोध प्रसंगों में सामाजिक तथ्यों, परिवेशों, पर्यावरण, व्यवहारों आदि को व्यक्ति या समूह के राजनीतिक व्यवहार के निर्माण– निरूपण का आधारतत्व एवं आधारमाध्यम के रूप में स्वीकारते हैं। राजनीतिक व्यवहार के बैविध्यताओं, उन्हें प्रभावित करनेवाली परिस्थितियॉ तथा उन प्रभावों की वजह से होने वाले परिवर्तनों की जमीनी सच्चाई के आधार पर मानव व्यवहार का राजनीतिक विश्लेषण करना इस संकल्पना का मूल उद्देश्य है। इस संकल्पना घ्येय है विभिन्न राजनीतिक यवस्थाओं एवं प्रक्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना, राजनीति विज्ञान की विषय–वस्तु का यथासंभव विस्तार करना, अन्तरानुशासनिक दृष्टिकोण अपना कर अन्य सामाजिक विज्ञानों एवं प्राकृतिक विज्ञान में प्रयुक्त की गई

अध्ययन– पद्वतियों, मान्यताओं, दृष्टिकोणों, पुर्वानुमानों एवं निष्कर्षों को अपना कर राजनीति का व्यापक अर्थबोधा प्रस्तुत करना तथा ऐसे समस्त सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक प्रसंगों को अपनी पाठय–सामग्री में शामिल करना जो आधानिक राजनीति की दिशा– दशा के निर्धारक तत्त्व है।

व्यवहारवाद से उत्तरव्यवहारवाद : विकास के विभिन्न आयाम

व्यवहारवादी अवधारणा के विकास का इतिहास अमेरिका के प्रसिद्व राजनीतिक विद्वतजनों द्वारा राजनीतिक प्रसंगों के तथ्यपरक– यथर्थपरक विश्लेषणात्मक अध्ययन करने की मानसिकता का परिचायक हैं। इस अनुभवाश्रित व्यापक संकल्पना की आरंभिक जड़े 1908 में प्रकाशित ग्राहम वालास की रचना 'भ्नउंद छंजनतम पद चवसपजपबेष में मिलती हए जिसमें वालास ने मनुष्य के राजनीतिक व्यवहार का अध्ययन सामाजिक– मनोवैज्ञानिक आधार पर करने पर बल दिया है। वालस ने राजनीति में अविवेक की भूमिका की व्याख्या विस्तार से की है साथ–ही इस बात के लिए खेद प्रकट किया है कि शोधाकर्ता राजनीतिशास्त्रो अपने अध्ययन–प्रवृत्ति की खामियों की वजह से मनुष्य की प्रकृति–प्रवृत्ति के कई आयामों एवं उनपर पड़ने वाले प्रभावों के अध्ययन की उपेक्षा कर देते है। 1913 ई0 में लॉवेल ने अपनी रचना में मनुष्य के राजनीतिक व्यवहार को समझने पर काफी जोर दिया। व्यवहारवादी अवधाारणा से जुड़ा जार्ज कैटलीन एक ऐसा नाम है जिन्हें व्यवहारवादी राजनीति विज्ञान के अध्ययन के लिए 'अन्तःशास्त्रीय उपागम' के प्राथमिक प्रयोग का श्रेय प्राप्त है।

व्यवहारवादी अध्ययन परम्परा की नींव डालने में अर्थर ए0 एफ0 बेन्टले और चार्ल्स मेरियम का नाम सबसे ऊपर हैं। अध्ययन प्रविधियों में परिमाणन एवं मापन पर बन्टले को बहुत यकीन था। वह शोध–प्रविधियों का कुशल ज्ञाता एवं सिद्वान्तशास्त्रो था। उनकी अपनी कृति Process of government में पहली बार समूह हतवनच एवं प्रक्रिया च्तवबमे के अध्ययन का समायोजित रूप प्रस्तुत किया गया । बन्टले की इस प्रस्तुति में दो बातें मुख्य हैं, प्रथम राजनीति क संबंध में जानकारी और उससे जुड़े अन्वेषणों में वास्तविकता के स्तर तक पहुॅचने के लिए समूह की अवधारणा का विकास आवश्यक है। द्वितीय–राजनीतिक तथ्यों से जुड़ी

वास्तविकताओं को ठीक से जानने–समझने के लिए एक मात्रा सही उपागम होगा 'प्रक्रिया की अवधारणा' का प्रतिपादन।

बन्टले द्वारा प्रतिपादित 'समूह की संकल्पना एवं प्रक्रिया की संकल्पना' व्यवहारवादी उपागम के उद्‌भव विकास क लिए मजबूत आधार है क्योंकि इसका प्रयोग व्यवहारवादियों द्वारा सामाजिक घटनाओं के आलोक में राजनीतिक यथार्थताओं की गहराई को मापने एवं घटनाओं से जुड़े तथ्यों की वास्तविकताओं को जानने समझने के लिए किया गया ।

व्यवहारवादी संकल्पना को वैचारिक आन्दोलन के रूप में क्रान्ति की संज्ञा दी गई है। व्यवहारवादी क्रान्ति के आगमन की घोषणा 1925 में शिकागों में की गई। अपनी प्रसिद्व रचना छमू ेचमबजे वि च्वसपजपबे. 1925 मे ंचार्ल्स मेरियम ने व्यवहारवाद के अध्ययन तत्व से प्रासंगिक उन विशेष प्रविधियों, दृष्टिकोणों, उद्वेश्यों एवं आग्रहों की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत की है, साथ ही, उनके जुड़ी मान्यताओं का भी प्रतिपादन किया है जिसकी पहचान आगे चलकर व्यवहारवाद से सम्बद्वता के रूप में हुई। मरियम द्वारा विषय–प्रस्तुतीकरण में तथ्यपरक अन्वेषणों के परिमाणन पर विशेष बल दिया गया है। मेरियम की इस प्रस्तति मे 'एक ऐसे उॅच' स्तर की राजनीतिक–सामाजिक विज्ञान के उद्‌भव की कल्पना की गई जिसके माध्यम से और बेहतर ढंग मानव व्यवहार का समायोजित अध्ययन करना संभव हो सकेगा और जिसके अन्तर्गत मनुष्य के आन्तरिक मूल्यों की अभिव्यक्ति अधिक सम्पूर्ण ढंग से को जा सकेगी।

एक लम्बे समय तक व्यवहारवादी राजनीति विज्ञान का अध्ययन शिकोगों विश्वविद्यालय के दायरे में ही सीमित रहा । मेरियम के प्रेरणास्पद नेतृत्व में इस विश्वविद्यालय का राजनीति विज्ञान विभाग मनुष्य के राजनीतिक व्यवहार से जुड़ी शैक्षणिक गतिविधियों के अध्ययन का सबसे सक्रिय केन्द्र रहा जिसकी छत्र छाया में हेरॉल्ड लॉसवल, क्विंसी राईट, फ्रेडरिक शूमैन, लियोनार्ड हवाइट, वी ओ0 की जूनियर, गेब्रियल ऑल्मंड, हबर, साइमन, डेविड ईस्टन जैसे विख्यात विद्वतजनों की एक बड़ी फौज तैयार हुई जिन्होंने व्यवहारवादी क्रान्ति की अगुआई में अग्रेसर की भूमिका निभाई। जब अमरीकी राजनीति वैज्ञानिकों की अध्ययन परम्परा में व्यवहारवाद मनोवैज्ञानिक प्रविधिया के प्रयोग की सफलताओं–असफलताओं के

खंडन मंडन के बीच उलझा हुआ था, उसी दौरान व्यवहारवादी संकल्पना का विकासक्रम अनेक उन यूरोपीय विद्वतजनों द्वारा तैयार की जाने वाली अध्ययन प्रवृत्ति से प्रभावित हुआ जिनके द्वारा राजनीति की वास्तविकता के अध्ययन हेतु समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण के प्रयोग की वकालत की गई। इनके द्वारा राजनीतिक घटनाओं एवं प्रक्रियाओं का अध्ययन सामाजिक घटनाओं एवं प्रक्रियाओं के आलोक में करने का दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया और इसकी सफलता के लिए वैज्ञानिक पद्वति के प्रयोग एवं वैज्ञानिक सिद्वान्तों के विकास की बात की गयी। इस कोटि के विद्वतजनों में अगस्त कॉम्टे, यूमील दुर्खीम, मैक्सबेनर, सिगमण्ड फ्रायड आदि का नाम उल्लेखनीय है जिनकी वैचारिक प्रेरणा से व्यवहारवाद समाज–सापेक्ष अध्ययन की ओर उन्मुख हुआ। प्रसिद्व समाजशास्त्री कॉम्टे ने अपनी रचनाओं में राज्य एवं राजनीतिक संस्थाओं की प्रकृति एवं प्रवृत्ति पर समाज के बदलते हुए स्वरूप एवं पर्यावरण की प्रतिक्रिया प्रभाव आदि की विस्तृत विवेचना प्रस्तुत की है। दुर्खीम को 'संस्थानात्मक प्रकायवाद (Structural- Functionalism) का सस्थापक माना जाता है जहॉ हबट स्पेन्सर ने जीवित प्राणी एवं सामाजिक सरचनाओं में साम्यता का उदाहरण प्रस्तुत किया है, वहीं मैक्सवेबर द्वारा प्रतिपादित विषय– संदर्भों में सामाजिक विश्लेषण के लिए नैतिक दृष्टि से तटस्थता या मूल्य मुक्त (value free) दृष्टिकोण अपनाने पर जोर दिया गया हैं थर्सटोन एवं सिगमण्ड फ्रायड ने व्यवहारवादी अवधारणा को मनोविज्ञान से सम्बद्व किया है।

व्यवहारवाद का पुनरोत्कर्ष द्वितीय विश्वयुद्व के पश्चात् 1940 के दशकों में हुआ लेकिन, अब इसका केन्द्र शिकागो विश्वविद्यालय नहीं था। इस अवधि में व्यवहारवादी राजनीति विज्ञान के अध्ययन पर व्यवस्था उपागम एवं समाज शास्त्रीय दृष्टिकोण का व्यापक प्रभाव पड़ा । इस नई संकल्पना पर जिन समाज शास्त्रियों के दृष्टिकोण का ज्यादा प्रभाव पड़ा उनमें– गेटानो भेस्का, मैक्सबवस टॉलकॉट, पारसन्स, एलेक्सिस, दि टॉकविल मौइसी ऑस्ट्रोगॉस्की, रॉबर्ट मर्टन, बैरिग्टन, मूर आदि का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनमें से कुछ विद्वान कालान्तर में राजनीतिक समाज शास्त्री के रूप में प्रसिद्व हुए। क्रिर्क पैट्रिक के शब्दों में '1945 से 1955 के बीच व्यवहारवादी राजनीति विज्ञान का अर्थ एक दृष्टिकोण, एक चुनौती, एक अभिवृत्ति और एक सुधार आन्दोलन के रूप में लिया गया'। द्वितीय

विश्वयुद्व के बाद व्यवहारवादी शोधकार्यों को प्रोत्साहन, समर्थन एवं संरक्षण देने में अनेक उदारवादी संस्थाओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही जिनके अस्तित्व में आने का एकमात्र उद्वेश्य व्यवहारवादी अध्ययन परम्परा का विकास एंव विस्तार करना था, जिसके परिणामस्वरूप 1950 के दशक के उत्तरार्द्व तक व्यवहारवादी अध्ययन प्रवृति की परम्परा स्थापित हो गयी। राजनीति विज्ञान की अध्ययन विद्या में आये इस बदलाव की वजह द्वितीय विश्वयुद्व के उपरान्त अन्तर्राष्ट्रोय राजनीतिक परिदृश्य में उत्पन्न राजनीति की मौजूदा परिवतित परिस्थितियॉ थी एवं कुछ महत्वपूर्ण सामाजिक– आर्थिक राजनीतिक अर्न्तराष्ट्रीय घटनाएं थी।

एल्पफ्रेड डी ग्राजिया ने (What is political Behaviour) में व्यवहारवाद को परिभाषित करते हुए कहा है 'व्यवहारवादी राजनीति विज्ञान अपने आप में एक विषय एक अन्तःशास्त्रीय विज्ञान है, परिमाणोकरण एवं नई प्रतिनिधियों के अविष्कार का एक विशेष प्रयत्न है, व्यवहारवादी मनोविज्ञान आदर्शवादिता के विपरीत यथार्थवादिता है, निगमन पद्वति के विपरीत अनुभववाद है।'

जोसेफडनर ने भी अपनी कृति (Dictionary of political science) में व्यवहार के स्वरूप की व्याख्या करते हुए कहा है 'व्यवहारवाद सामाजिक घटनाओं का पूर्वाभिमुखीकरण जो मुख्य रूप से अनुभववाद (Empiricism) तार्किक प्रत्यक्षवाद (Logical positivism) और अनुशासनिक स्वार्थों (Disciplinary interest) से संबद्व रहता है इस संकल्पना के प्रतिपादकों की यह मान्यता है कि यह अध्ययन प्रवृत्ति अन्तरानुशासनिक उपागम (Inter disciplinary approach) के प्रयोग द्वारा राजनीतिक–सामाजिक प्रश्नों का उत्तर गुणात्मक परिमाणात्मक अर्थ में देने का प्रयास करता है।

एक संकल्पना के रूप मे व्यवहारवाद राजनीतिक तथ्यों की सामाजिक संदर्भ में व्याख्या का एक विशेष तरीका है। इस अवधारणा की प्रकृति– प्रवृत्ति अनुभावनात्मक एवं क्रियात्मक दोनों है जिसमें व्यक्तिनिष्ठ मूल्यों एवं कल्पनाओं के लिए कोई जगह नहीं हैं इस संकल्पना के अध्ययन का प्रधान तत्व मनुष्य का राजनीतिक व्यवहार है। इसके प्रतिपादक राजनीतिक व्यवहार के वास्तविका का अध्ययन के परिपेक्ष्य में करने का अत्यधिक जोर देते है। इनका मानना है कि राजनीति विज्ञान एवं दूसरे सामाजिक विज्ञानों मे एक विशेष अन्तर यह है कि

राजनीति विज्ञान के अघ्ययन का संबंध समाज के अन्तर्गत चलने वाला नियंत्राण एवं शक्ति के प्रयोग से है। इस संदर्भ में व्यवहारवादी अवधारणा की सबसे बड़ी उपलब्धि है विषय को मानकोय (Normative) दायरे से मुक्त कराके प्रयोगाश्रित विज्ञान ;म्उचतपबपबंस ैबपमदबमद्ध का स्वरूप प्रदान करना। अपनी इस अभिुपुष्ट सापेक्ष (Subject to confirmation) उद्वेश्य की प्राप्ति हेतु उनके द्वारा राजनीतिक घटनाओं, समस्याओं, मुद्दों जनसरोकारगत सवालों, पर्यावरण आदि से संदर्भित शोधकार्यों में तथ्य संकलन, प्रेक्षण, परीक्षण, निष्कर्ष आदि के लिए अनुभवसिद्व उपागमों सिद्वान्तो का प्रतिपादन किया गया ताकि मनुष्य के राजनीतिक व्यवहार से संबंद्व प्रासंगिकता का तथ्यपरक यथार्थपरक अध्ययन विश्लेषण करना संभव हो सके। व्यवहारवादी संकल्पना के प्रतिपादकों की दो मुख्य प्रवतियॉ हैं, प्रासांगिकता (Relevance) एवं क्रियात्मकता (Action)। व्यवहारवादी इन्हीं दोनों विशेषताओं के आलोक में राजनीति विज्ञान को शुद्व विज्ञान की पहचान दिलाने की दिशा में सदैव प्रयासरत रहे है। इसके प्रतिपादकों एवं समर्थकों की मान्यता इस वैचारिक नींव पर टिकी है कि सामाजिक विज्ञानों की अवधारणाएं एवं सिद्वान्त भी प्राकृतिक विज्ञानों की तरह हो सकते है। इसी मानसिकता के तहत इसमें प्राकृतिक विज्ञानों की तर्ज पर विषय के वैज्ञानीकरण के लिए नियमितताएं, सत्यापन, परिमाणीकरण, क्रमबद्वीकरण, एकीकरण एवं मूल्य निरपेक्षता जैसी प्रविधियों का इस्तेमाल योजनाबद्व ढंग से किया गया है। इस प्रसंग में व्यवहारवादी उपागम का बुनियादी आधार माध्यम है–वैज्ञानिक परिशुद्वता, तथ्य–संकलन, सत्यापन, पक्षण, परीक्षण, परिमाणन एवं प्राकल्लपना जैसी विद्याएं और इन समस्त शोध क्रियाओं की प्रासंगिकता का लक्ष्य है राजनीति विज्ञान को शुद्व विज्ञान की कोटि में शामिल करना ।

व्यवहारवादी अध्ययन परम्परा अपने विकास की तीन महत्वपूर्ण अवस्थाआ को पार कर चुका है।

पहली अवस्था– व्यवहारवादी अध्ययन पद्वति की पहली अवस्था द्वितीय विश्वयुद्व का पूर्वाद्व काल है। यद्यपि इस अवस्था में विषय के अध्ययन क्षेत्र एवं प्रविधियों के विकास में कोई क्रान्तिकारी पहल का साक्ष्य उपलब्ध नहीं है तथापि विकास की इस अवस्था का भी अपना महत्व है जिसमें स्टुअर्ट राइस और हैरॉल्ड लासक की कृतियों से प्रेरित होकर अन्य राजनीति विद्वानों द्वारा भी अपनी अपनी रचनाओं में

विषयगत अध्ययन– विश्लेषण हेतु परिमाणात्मक आधार–सामग्री और सांख्यिकीय तालिकाओं का प्रयोग अधिकता से किया जाने लगा। व्यवहारवादी अध्ययन प्रवृति के इस चरण में राजनीति शास्त्र की अध्ययन विद्या परम्परागत मान्यताओं के दायरे में सिमटी रही, इसके बावजूद इस अवस्था की उपलब्धियों में अध्ययन के लिए प्रयुक्त रूढ़िगत तकनीकों की अपेक्षा कुछ अधिक परिष्कृत तकनीकों का प्रयोग एवं विकास शामिल हैं । इसी अवस्था में मात्रात्मक वर्णन पद्वति की लीक से हटकर विषय–वस्तु के अध्ययन–विश्लेषण में तथ्यात्मक आधार अपने प्रवृति की बुनियाद पड़ी। सर्वप्रथम लासवेल द्वारा राजनीति संदर्भित विषयों के अध्ययन में विषय–विश्लेषण का प्रयोग और व्यक्ति के व्यवहार को समझने के प्रयास में प्राथमिक रूप से मनोविश्लेषण के सिद्वान्त की ओर झुकाव इस अवस्था की उल्लेखनीय उपलब्धि है, जिसका प्रयोग पुराने नये व्यवहारवादियो को वैचारिक स्तर पर संबद्व करने क प्रतिमान के रूप में किया जाता है।

विकास के इस चरण में अध्ययन के लिए नई प्रयुक्ता विद्याओं का प्रयोग एवं उद्वेश्य सीमित था जैसा कि लेजार्स फल्ड ने कहा है कि नई प्रविधियों के प्रयोग का उद्वेश्य केवल इतना भर था कि राजनीति शास्त्रके तत्कालीन प्रतिमानों का वर्णन और विश्लेषण अत्यधिक सुनिश्चित तरीके से किया जा सके । व्यवहारवादी अवधारणा की यह अवस्था विषयगत अध्ययन क्षेत्रा में कोई विशेष क्रान्तिकारी परिवर्तन तो नहीं ला सकी लेकिन इस अवस्था में अध्ययन तकनीकों की विद्याओं में लाए गए सुधारात्मक प्रयासों के फलस्वरूप द्वितीय विश्वयुद्वोपरान्त व्यवहारवादी अध्ययन प्रवृति में क्रान्तिकारी बदलाव के लिए पुख्ता जमीन तैयार हुई। पहली अवस्था की सुधारात्मक अध्ययन प्रकृति ने एक संकल्पना के रूप में व्यवहारवादी क्रान्ति के आगमनमें मौलिक माध्यम की कारगर भूमिका निभायी जिसकी बदौलत अपने विकास के दूसरे चरण (द्वितीय विश्वयुद्व के उत्तरार्द्वद्ध) मे यह अध्ययन प्रवृति एक क्रान्तिकारी आन्दोलन के रूप में अपनी खास पहचान बनाने में पूरी तरह सक्षम हो पाया।

द्वितीय अवस्था– व्यवहारवादी अवधारणा की द्वितीय अवस्था द्वितीय विश्वयुद्व के उत्तरार्द्व की है। युद्व उत्तरार्द्व 1940–60 की अवधि को व्यवहारवादी संकल्पना का चर्मोत्कर्ष काल कहा जाता है। इस अवस्था के प्रमुख हस्ताक्षरों में डेविड ईस्टन,

रॉबर्ट डाल, ऑल्मंड एंड पॉवेल, काली डायच, राबर्ट डॉल ऑमंडल एण्ड पॉवेल, कार्ल डायच, हैरॉल्ड लासवेल, आदि नाम शामिल है जिन्होंने व्यवहारवादी संकल्पना का अध्ययन विस्तार करते हुए वैज्ञानिक प्रविधियों के प्रयोग द्वारा नई शोध–तकनीकों शोध प्रतिभानों व सैद्वान्तिक योजनाओं का विकास कर आदर्शी राजनीति 'ाास्त्रको अनुमाविक राजनीतिविज्ञान के रूप में नई पहचान दी। आधनिक राजनीति विज्ञान के तथ्यपरक यथार्थपरक अध्ययन विश्लेषण मे प्रयुक्त होनेवाले व्यवस्था उपागम संरचनात्मक प्रकार्यात्मक उपागम, संतुलन सिद्वान्त, खेल सिद्वान्त, संचार सिद्वान्त, निर्णयपरक सिद्वान्त, मार्क्सवादी लेनिनवादी उपागम आदि इसी अवस्था की देन हैं यह अवस्था मुखर रूप से राजनीति विज्ञान प्रासांगिक शोध प्रसंगों तथ्यों का अन्वेषण अनुसंधान एवं शोध विधाओं के स्वरूप में वैज्ञानिकीकरण आधारित प्रगति, विस्तार एवं क्रान्तिकारी परिवर्तन का परिचायक हैं। व्यवहारवादी अध्ययन प्रवृति को ज्यादा से ज्यादा व्यवहारपरक बनाने के लिए इस अवस्था के नामचीन विद्वतजनों द्वारा तथ्यागत राजनीतिक अनुसंधान एवं यर्थाथगत विश्लेषण सत्यापन परीक्षण सर्वेक्षण नियमन, व्यवस्थावादीकरण, परिमाणनीकरण, एकीकरण, समुच्चीकृत, सांख्यिकोय विश्लेषण व्यवस्थितकारक विश्लेषण, कार्यकरण प्रतिमान जैसी अनेक विद्याओं का प्रयोग राजनीतिक प्रयोगशालाओं में बड़े पैमाने पर होन लगा। इस अवस्था की उपलब्धियचों में व्यवहार वादियों द्वारा व्यापक पैमानेपर अघ्ययन विश्लेषण हेतु प्रतिपादित सिद्वान्त शामिल हैं लेकिन उन प्रतिपादित सिद्वान्तों के परीक्षण के लिए पर्याप्त आधनिक शोध– तकनीकों का विकास नहीं हो पाया जिसकी वजह से व्यवहारवादी विद्वतजनों के बीच अघ्ययन–विश्लेषण के लिए प्रयुक्त प्रविधियों को लेकर मतभेद गहराने लगा। व्यवहारवादियों के बीच अघ्ययन की कई विद्याओं पर तीखे मत–मतांतर की वजह से गंभीर असंतोष का लावा धोरे–धोरे ज्वालामुखी की शक्ल अख्तियार करने लगा जिसक परिणामवाद का पर्दापण हुआ।

तीसरी अवस्था– व्यवहारवादी अवधारणा की इस अवस्था की उपलब्धियों–अनुपलब्धियों के साथ यह तथ्य भी जुड़ा है कि 1960 से 1970 के मघ्य में राजनीति विज्ञान के यर्थाथपरक अघ्ययन– विश्लेषण के लिए गणितीय तकनीकों, बहुत परिवर्त्य विश्लेषण एवं परिमाणात्मक मुक्तियों का तेजी से विकास होने की

वजह से परम्परागत व्यवहारवादियों की शोध–सिद्वान्तों के विकास, अन्वेषण–अनुसंधान, परिमापन, निरूपण भविष्यकथन, शोध–तकनीकों के प्रयोग आदि के संबंध में गंभीर अन्तर्विरोध की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी। राजनीतिक विद्वतजनों के अध्ययन–विश्लेषण के क्षेत्रा में उत्पन्न मौजूदा गतिरोध को दूर करने का प्रयास तेज होने लगा जिसके सकारात्मक परिणाम के रूप में व्यवहारवादी की तीसरी अवस्था उत्तर व्यवहारवाद का आगमनहुआ। व्यवहारवादी अध्ययन के यह नई अवधारणा बीसवीं शताब्दी के सातवें दशक में स्पष्ट रूप से प्रकट हुई।

अमेरिकन पॉलिटिकल साइंस एसोसिएशन 1969 के वार्षिक अधिवेशन में अपने अध्यदीप भाषण के दौरान डेविड ईस्टन ने व्यवहारवादी उपागम में प्रयुक्त तकनीकों, उपकरणों की उपयोगिता पर सवाल उठाकर व्यवहारवादी उपागम में प्रयोगरत विधाओं के प्रति गंभीर असंतोष व्यक्ति करते हुए उत्तर व्यवहारवाद के आगमन की घोषणा की जो व्यवहारवाद का परिष्कृत एवं संशार्धित रूप हैं डेविड ईस्टन द्वारा की गई इस उद्घोषणा में अनेक समकालीन राजनीतिक विशारदों के मन्तव्य का प्रकटीकरण व स्पष्टीकरण प्रसंग शामिल था। तृतीय चरण के आरंभ के परिणमास्वरूप, 1970 तक आते आते विषय संदर्भित अध्ययन–विश्लेषण अनुसंधाान से संबंधित प्रसंग पर विद्वतजनों में गंभीर मतभेद की स्थिति उत्पन्न हो गयी। व्यवहरवादी अवधारणा की इस अवस्था में गणितीय प्रविधियों समस्त अन्वेषणों–अनुसंधानों पर इतने गहन रूप में हावी हुआ कि शोधगत प्रसंगों पर स्वयं व्यवहारवादी ही आपस में सैद्वान्तिक उपलब्धियॉ पिछड़ने लगी जिसके फलस्वरूप व्यवहरवादी दो खेमें में बंट गए– पहले वर्ग के हस्ताक्षरों को सैद्वान्तिक व्यवहारवादी (Theoris Behavioualists) कहा गया जो शोधगत आधार–सामग्री की ठोसता की कसौटी पर परखने की परवाह न करते हुए सिद्वान्त– निर्माण के ताने बाने बुनने में संलग्न रहे। दूसरा वर्ग उन व्यवहारवादियों का प्रतिनिधित्व करता है जो तथ्यगत शोध कार्य के लिए शोध प्रविधियों के अन्वेषण अनुसंधान एवं प्रयोग में इस कदर खोये हुए थे कि उन्होंने अपने अध्ययन में राजनीति विज्ञान और उसके अध्ययन से संदर्भित सिद्वान्त दोनों को तरजीह नही ंदी। विद्वतजनों के इस वर्ग का सकारात्मक व्यवहारवादी (Positive Behavioualists) की संज्ञा दी गई। शोध विद्याओं की दृष्टि

से दोनों विचारधाराओं के प्रतिनधि धोरे– धोरे परम्परावादियों सेभी अधिक एक दूसरे के कटु आलोचक हो गए।

इस अवस्था में व्यवहारवादी आन्दोलन जितनी तीव्रता से लोकप्रियता की शिखर पर पहुॅचा उसी अनुपात में उसका अस्तगमन भी आरंभ हो गया,क्योंकि समकालीन व्यवहारवादी आलोचकों द्वारा एक दूसरे के व्यवहारवादी संकल्पना के अस्तित्व पर जिन कारणों से गंभीर शब्द प्रहार किया जा रहा था उनमें मुख्यतः मानव व्यवहार के प्रासंगिक अघ्ययन हेत विषय–वस्तु के चयन, प्रविधियों का प्रयोग, राजनीतिक घटनाओं के सत्यापन का प्रसंग, राजनीतिक यर्थाथ के अघ्ययन विश्लेषण का प्रसंग, नीति–निर्माण से संबंधित प्रसंग एवं कठिन भाषा के अविष्कार का प्रसंग शामिल था । समकालीन व्यवहारवादी विवेचकों द्वारा किए जा रहे मे विभाजित हो गए। 1970 के आसपास व्यवहारवादियों की सोच में पड़ी फूट की वजह से मोटे तौर पर वे दो गुटों में विभाजित हो गए। वास्तविक व्यवहारवादी (Positive Behavioualists)एवं सैद्वान्तिक व्यवहारवादी (Theoris Behavioualists)।

इस प्रकार व्यवहारवादी अघ्ययन पद्वति का प्रथम चरण द्वितीय विश्वयुद्व के आरंभ होने के पूर्व का है जिसमें स्टुअर्ट राइस तथा हैरोल्ड गोस्नेल के नेतृत्व में शोधकार्य हेतु आनुमविक तथा परिणामात्मक प्रविधियों का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग किया गया। यद्यपिइ स चरण में नयी अघ्ययन – तकनीक की ओर विषय का झुकाव स्पष्टतः दिखाई देता है तथापि राजनीति शास्त्र की अघ्ययन प्रवृति मूलतः परम्परागत ही रही। द्वितीय विश्व युद्वोपरान्त इस अघ्ययन प्रवृति के दूसरे चरण का आरंभ हुआ जिसमे ंराजनीति वैज्ञानिकों द्वारा पूरे जोर शोर से शोध प्रसंगों के अन्वेषण अनुसंधान हेतु आनुभविक तथा परिमाणावाचक तकनीकों का प्रयोग बड़े पैमाने पर किया जाने लगा। डेविड ईस्टन, गेगियल ऑल्मंड, हैराल्ड लासवेल, रॉनर्ट डॉल, कार्ल डायश आदि विद्वतजन राजनीति विज्ञान के अघ्ययन हेतु अनुभाविक कारणात्मक सिद्वान्त के निर्माण में संलग्न हो गए। इनके गंभीर प्रयासों के परिणामस्वरूप इस अवधि में व्यवस्था सिद्वान्त, निर्णय सिद्वान्त, अस्तित्व व्यवहार में आया। इस कालावधि में शोधगत अन्वेषणों से प्रासंगिक विद्याओं व प्रयोग मूलक पद्वतियों के क्षेत्रा में उल्लेखनीय तरक्की हुई जिसके परिणामस्वरूप राजनीतिक प्रसंगों के अनुसंधान में अर्न्तवस्तु विश्लेषण, समुच्चीकृत सांख्यिकी विश्लेषण, कारणात्मक

प्रतिरूपण, सर्वेक्षण आदि का बड़े पैमाने पर प्रयोग होने लगा। तीसरे चरण में राजनीतिक शोध– प्रसंगों पर किए जानेवाले अनुसंधानों पर गणितीय तकनीकों का व्यापक प्रयोग किया जाने लगा। व्यवहारवादियों के बीच मत–विभाजन का आधार बना। इस प्रकार परम्परावाद, सैद्वान्तिक व्यवहारवाद एवं सकारात्मक व्यवहारवाद तीनों का संशोधित और परिष्कृत रूप है उत्तर व्यवहारवाद जिसके अस्तित्त्व में राजनीति विज्ञान की व्यवहारवादी अध्ययन प्रवृति की तीनों अवस्थाओं का समन्वय एवं समायोजन है।

बहरहाल व्यवहारवादी अध्ययन की सबसे बड़ी उपयोगिता यह रही कि इसने राजनीति विज्ञानके अध्ययन क्षेत्रा को मानकीय आयामों से मुक्त करेअनुभवाश्रित अध्ययन क्षेत्रा में प्रवेश कराया जिसकीवजह से राजनीति राज्य और सरकार के अध्ययन दायरेसे बाहर सत्ता शक्ति के प्रयोग का अध्ययन बन गयी। व्यवहारवादी अध्ययन प्रवृति के संबंध में प्रतिपादित कुछ खास राजनैतिक विद्वानों के प्रतिष्ठित विचारों का संकलन यहॉ प्रस्तुत किया जा रहा है :–

रॉनर्ट डॉल का व्यवहारवाद

रॉनर्ट डॉल के शब्दों में व्यवहारवादी क्रान्ति परम्परागत राजनीति विज्ञान की उपलब्धियों के प्रति असंतोष का परिणाम है जिसका उद्वेश्य राजनीति विज्ञान को अध्यधिक वैज्ञानिक बनाना हैं। डॉल के विचार में विवेकपूर्ण व्यवहार का अर्थ है उद्वेश्य आधारित निश्चित व्यवहार। उन्होंने विकेकपूर्ण व्यवहार के सात उद्वेश्यों की चर्चा की है, यथा–लोकतंत्रा, स्वतंत्राता, समानता, तर्कपूर्णता, सुरक्षा, प्रगति एवं समुचित सम्मिलन। इन्होंने कुछ अन्य उद्वेश्यों का भी जिक्र किया है जैसे शक्ति, सम्मान, आत्म सम्मान, ज्ञान, कुशलता, प्रेम तथा स्नेह ।

डॉल ने अपने प्रतिपादित विचारों में सभी राजनीतिक व्यवस्थाओं के विशेष लक्षणों में समानता पाए जाने की बात की है जा राजनीतिक नेतृत्व, राजनीतिक प्रभाववितरण एवं राजनीतिक सत्ताधारियों के निर्णय प्रक्रिया के अनुपालन से संबद्व है। इनके विचार में यही वो आधारभूत परिस्थितियॉ हैं जो व्यवस्था के पर्यावरण में निरन्तर चलते रहने वाले संघर्षों, प्रतिस्पर्धाओं, द्वन्द्वों ,विवादों तनावों की मौजदूगी में व्यवस्थागत राजनीतिक व्यवहार को उद्वेलित करती रहती है।। राजनीतिक

व्यवस्थान्र्गत विभिन्न राजनीतिक सामाजिक समूहों, संगठनों के बीच नेतृत्व के लिए खीचतान जारी रहता है। यही राजनीतिक तनातनी राजनीतिक व्यवहार में होने वाले अविविन्यासों की मूल वजह है।

रॉनर्ट डॉल के व्यवहार का अभिप्राय एक ऐसे गंभीर आन्दोलन से है जिसका उद्वेश्य राजनीति विज्ञान के अघ्ययन को आधनिक समाजशास्त्रा, अर्थशास्त्रा, मनोविज्ञान में विकसित सिद्वान्तों प्रतिमानों, पद्वतियों, अन्वेषणों– अनुसंधानों एवं दृष्टिकोणों के सीध सम्पर्क में लाना हैं यह एक ऐसा उपाय है जो राजनीति विज्ञान के अघ्ययन से प्रासंगिक आनुभविक तत्वों को अधिक वैज्ञानिकता प्रदान करता हैं डॉल के विचार में व्यवहारवाद का उद्वेश्य है– प्रशासन संबंधो समस्त घटनाओं को व्यक्ति के एक ऐसे व्यवहार के रूप में प्रस्तुत करना जिसका प्रेक्षण ;वइेमतअंजपवदद्ध किया गया है या किया जा सकता हैं इनके विचार में इसकी प्रकृति, अघ्ययन की बारीकियॉ, प्रेक्षण एवं सत्यापन की समस्याएं, राजनीतिक अवधारणाओं के परिमाणीकरण एवं परक्षणों को सकारात्मक अर्थ प्रदान करता है। डॉल के विचार में यह प्रवृति अघ्ययन मार्ग मे आने वाले अनुत्पादक परिवर्त्यों को किनारे हटाते हुए अन्य सामाजिक विज्ञानों में विकसित की गई शोध– प्रविधियों और सिद्वान्तों के साथ नजदीकी संबंध स्थापित करता हैं यह अवधारणा राजनीतिसे संबद्व पक्षों को समझने के लिए विषय से संबद्व उन तथ्यों के स्पष्टीकरण की खोज करता है जिनकी सच्चाई की पूरी छान–बीन की जा सकती है, जिनकी अघ्ययन प्रविधियों पर आपत्तियॉ उठाना आसान न हो, जो घटनाओं की गहराई को जाने समझने की क्षमता रखता है और जो राजनीति की चिर स्थायी ;च्मतचमजनंसद्ध समस्याओं को समझने के लिए उनकी तुलना में अधिक उपयोगी है जिनकी जगह परउनका विकास किया जा रहा है।

व्यवहारवाद संदर्भित रॉबर्ट डॉल के उपर्युक्त विचारों की मूलअभिव्यक्ति यह है कि व्यवहारवादी अवधारणा राजनीति संदभ्रित अघ्ययन प्रसंग को सुधारने एवं अधिक वैज्ञानिक बनाने की संभावनाओं से संबंधित एक विशेषमनःस्थिति है जिस का संबंध राजनीतिक व्यवहार तथा व्यवहारवादी उपागम से जुड़े विषयों, विश्वासों, अधिामान्यताओं, पद्वतियों एवं परम्पराओं से है। डॉल के कथनानुसार व्यवहारवाद विषय संदर्भित आनुभविक तत्वों को अधिक वैज्ञानिक बनाने के प्रयत्न से अधिक

कुछ नहीं है। आगे इनका कहना है कि यह अवधारणा एक प्रयत्नभाव है विषय के अनुभाविक तत्वों को उस रूप में वैज्ञानिक बनाने का जिस अर्थ में उसकी गणना हम आनुभविक विज्ञान में करतेहैं । वस्तुतः डॉजल का यह मानना है िकइस प्रवृति का विशेष उद्वेश्य राजनीतिक विज्ञान के परम्परागत दोनों को अन्ततः एक विस्तावित नया स्वरूप देना है। डॉल ने भी व्यवहारवाद की मूल मान्यताओं को स्वीकार करते हुए अन्य व्यवहारवादियों की भांति राजनीतिक विश्लेषण केतकनीकों में वैज्ञानिक उपकरणों के प्रयोग एवं निरीक्षण का इस्तेमाल आवश्यक मानाहै और राजनीतिशास्त्र को स्पष्ट रूप से एक यर्थाथवादी विज्ञान;च्वेपजपअम ैबपमदबमद्ध के रूप में स्वीकार किया है।

डेविड हूमैन का व्यवहारवाद

व्यवहारवादी अवधारणा पर डेबिड हूमैन के विचारों का खुलासा हमें उसकी कृतियों में साक्ष्यांकित अभिव्यक्तियों के रूप में प्राप्त होता हैं 1951 में शिकागो विश्वविद्यालय के तत्वावधान में आयोजित राजनीतिक व्यवहार संदर्भित एक विचार गोष्ठी में राजनीतिक व्यवहार प्रसंग पर अपना ाविचार अभिव्यक्त करते हुए हूमैन ने कहा है व्यवहारवादी अध्ययन में व्यक्तियों और समूहों की वे सभी क्रियाएं एवं अन्तःक्रियाएं समावेशित है जिसका संबंध प्रशासन की प्रक्रिया से है। आगे ट्रूमैन का कहना है कि इसके संबंध में ज्यादा से ज्यादा यह कहा जा सकता है कि यह दृष्टिकोण राजनीतिक व्यवहार के अध्ययन के अन्तर्गत उन समस्य मानवीय गतिविधियों को शामिल करता है जिन्हें प्रशासन का अंग माना जा सकता है। विषयगत अर्थ संदर्भ के प्रसंग में इनका कहना है कि राजनीतिक व्यवहार एक विशिष्टता नहीं है और न ही उसे ऐसा माना जाना चाहिए क्योंकियह तो सिर्फ एक ऐसी अभिकृति या ऐसे दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है जिसका उद्वेश्य शासन से संबंद्व सभी घटनाओं का अध्ययन व्यक्ति के प्रेक्षित एवं प्रेक्षण योग्य व्यवहार के संदर्भ में करना है। इनकी दृष्टि में व्यवहारवादी अवधारणा का उद्वेश्य परम्परापगत अध्ययन प्रविधियों की जगह नई वैज्ञानिक प्रविधियों को अपनाना और अन्ततः राजनीति विज्ञान को नूतन एवं विस्तृत स्वरूप प्रदान करना है।

ट्रूमैन द्वारा प्रतिपादित व्यवहारवादी दृष्टिकोण के दो विशेष संदर्भ है : प्रथम– राजनीतिक व्यवहार से संबंद्व शोधकार्य हमेशा व्यवस्थित होना चाहिए और द्वितीय

शोधकार्य हेतु आनुभविक प्रविधियों का प्रयोग होना चाहिए। शोध कार्य के व्यवस्थित होने से ट्रूमैन का तात्पर्य है प्राक्कल्पनाओ की सुनिश्चित व्याख्या करना एवं साक्ष्य सामग्री को कठोरता के साथ व्यवस्थित रूप देना। इस प्रसंग में उनका दूसरा आग्रह अध्ययन प्रविधि के लिए आनुमाविक परीक्षण एवं आनुभविक प्रणालियों के प्रयोग की अपरिहार्यता से जुड़ा है।

ट्रूमैन का व्यवहारवादी दृष्टिकोण उग्र तथ्यवादियों एवं उग्र मूल्यवादियों के बीच संतुलन कायम करना हैं इनके कथनानुसार व्यवहारवादी अध्ययन का अंतिमलक्ष्य है राजनीतिक प्रक्रियाओं के वास्तविक संदर्भों के अध्ययन के लिए एक व्यवस्थित विज्ञान का विकास करना हैं इनके विचार में राजनीति विज्ञान को विवेकपूर्ण ढंग से दूसरे समाज विज्ञानों में किये जा रहे अन्वेषणों अनुसंधानों से कुछ नया सीखने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। शोध कार्यों में परिमाणीकरण का प्रयोग हमेशा गुणात्मक आधार पर होना चाहिए। ट्रूमैन की अभिव्यक्तिनुसार व्यक्ति के जीवन की क्रियाओं– प्रतिक्रियाओं का रूप कैसा होना चाहिए इसका राजनीतिक व्यवहार के अध्ययन से कोे संबंध नहीं हैं व्यवहारवाद को केवल मान गतिविधियों का अध्ययन करना है। आगे इन्होंने कहा है कि मनुष्य के व्यवहार का निर्धारक तत्व मूल्य हैइसलिए व्यवहार के अध्ययन प्रसंग में मूल्यों की उपेक्षा करना संभव नही हैं इस विषय पर ट्रूमैन की यह अभिव्यक्ति है कि शोधकर्ता द्वारा चयनकिए गए शोध प्रसंग एवं उसके जांच पड़ताल पर भी शोधकर्ता के व्यक्तिगत मूल्यों का प्रभाव पड़ता है ठीक वेसे ही जैसे प्राकृति विज्ञानों में पड़ता है। राजनीतिक व्यवहार का अध्ययन करते समय यदि व्यवहारवादी विषयगत ऐतिहासिक तथ्यों पर दृष्टि डालें तो इससे अध्ययन में ज्यादा सच्चाई आएगी।

ट्रूमैन शोधकर्ता के ऐतिहासिक बोध को राजनीतिक व्यवहार को समकालीन दृष्टि से देखनेका एक अनिवार्य पूरक मानते हैं। ये परम्पराओं को पूरीतरह समाप्त करने के भी विरोधो हैं तभी तो इनके द्वारा परम्परागत राजनीति 'ाास्त्रके अध्ययन में परिबोधन और परिमार्जन लाने की वकालत की गयी है, परम्परागत अध्ययन पद्वति को पूरी तरह नष्ट करने की नहीं। इनका मानना है कि किसी भी विषय को आधनिक बनाने के लिए उसके पुराने अस्तित्व को समाप्त न करके यदि नई उपलब्धियों उसकी पारम्परिक बुनियाद पर स्थापित की जाए और उसी आधार रेखा

पर विषयगत शोध कार्यों का निष्कर्ष निकाला जाय तो वह परिणाम कापफी ठोस, सकारात्मक प्रेरक और महत्वपूर्ण होगा। इनकी मान्यता है कि विषय के परम्परागत आधार तत्वों आधार माध्यमों और विषयगत समस्त आयामों को पूरी तरह समझे बिना व्यवहारवाद की अध्ययन सामग्री व आधार सामग्री को नतो व्यापक स्वरूप प्रदान किया जा सकता है और न ही परम्परागत बोध शून्यता शोध प्रसंगों से संबंद्व मानबोचित तत्वों की चेतनीयता के उन्नमुखीकरण एवं स्तरोन्नयन के लिए व्यवाहरिक रूप से मानकीकृत तथा उत्पादक सिद्व हो सकता है अर्थात अपनी रचनाओं में की गई अभिव्यक्तियों द्वारा ट्रूमैन ने यह सांक्ष्यांकित करने का गंभीर प्रयास किया है कि राजनीतिक व्यवहार का भी मासिंत अध्ययन करने वाले शोधकर्ता द्वारा परम्परागत परिबोधन के अभाव में किया गया व्यवहारपरक शोध का तत्व शून्य व अनुत्पादक साबित होगा।

रॉबर्ट डॉल ने भी ट्रूमैन द्वारा प्रस्तुत व्यवहारवाद संदर्भित इस विचार बंध को बुद्विमानी पूर्ण एवं न्यायसंगत उक्ति कहा है। साथ ही यह भी कहा है कि यदि व्यवहारवादी अध्ययनकर्ता आरंभ से व्यवहारवादी उपागम की अध्ययन तकनीकों में इन विशेषताओं पर चेतनीय रूप से घ्यान देते तो यह अवधारणा बहुत सारे अनर्गल आरोपों प्रत्यारोंपों से बच जाता और इसका अध्ययन स्तर अपेक्षाकृत ज्यादा परिबोधित परिमार्जित और मानकीकृत होता।

संक्षेप में ट्रूमैन का यह मानना है कि एक व्यवहारवाद एक ऐसे विचार का प्रतिनिधित्व करताहै जिसका उद्वेश्य सभी राजनीतिक घटनाओं समस्याओं को मनुष्य के अवलोकित एवं अवलोकनात्मक व्यवहार के परिपेक्ष्य में विवेचित व विश्लेषित करना है।

डेविड ईस्टन का व्यवहारवाद

1953 में प्रकाशित डेविड ईस्टन की कृति 'पालिटिकल सिस्टम' में ईस्टन ने यह कहा है कि व्यवहारवाद मात्रा एक विशेष मनःस्थिति नहीं है बल्कि उससे कुछ ज्यादा है।' इनका कहना है कि एक व्यवहारवादी शोधकर्ता जब राजनीतिक व्यवहार की संकल्ना को आधार मानकर शोधकार्य आंरभ करता है तो वह राजनीतिक व्यवस्था में भाग लेने वाले तत्वों को व्यक्ति के रूप में देखता है जो हाड़–मांस का प्राणी है, जिसकी अपनी भावनाएं इच्छाएं अधिमान्यताएं, ईष्या–द्वेष

आदि हैं। इस प्रसंग में परम्परावादी दृष्टिकोण पर प्रहार करते हुए ईस्टन कहते हैं कि परम्परावादियों की अध्ययन तकनीक मे ंराजनीतिक संस्थाओं को उनके निर्माणकर्ता की अपेक्षा इतनी ज्यादा प्रधानता दी जाती है कि मानों व्यक्तियोंसे पृथक वे स्वतंत्रा ईकाईयॉ हैं जबकि ईस्टन के शब्दों में व्यवहारवादी शोध प्रसंग वास्तविक रूप से व्यक्ति पर अपना समस्त अध्ययन केन्द्रित करता हैं। ईस्टन का यह मानना है कि व्यवहारवाद के आगमन से राजनीति विज्ञान की अध्ययनविद्या एवं सार वस्तु दोनों मे ंएक ही साथ क्रान्तिकारी परिवर्तन आया है । इनकी दृष्टि में मनुष्य का राजनीतिक व्यवहार अपने आप में एक अत्यधिक उलझा हुआ विषय है जिसका सीधा सरोकार मनुष्य के स्वभाव एवं मनोवांचित संदर्भों से है। मानव व्यवहार उफपर से जितना दिखता है उससे कई गुणा अधिक उसके विभिन्न आयाम व्यक्ति केमन की गहराइयों में छिपा होता है जिनकी तहों मे ंप्रवेश करने के लिए अन्तर्चक्षुओं की जरूरत पड़ती हैं इसीलिए राजनीतिक व्यवहारजैसे जटिल प्रसंग के अध्ययन केलिए एवं अनुभवाश्रित विश्लेषण के लिए व्यक्ति निष्ठ तत्वों का अध्ययन की विषय वस्तु मे ंप्रवेश अपरिहार्य हैं इस प्रसंग पर ईस्टन का कहनाहै कि राजनीति विज्ञान में व्यवहारवादी अध्ययन की प्रगति की दिशा में आके बढ़ने का प्रयास का परिणाम उतनासार्थक नहीं है जितनाकेउसे अन्तःशास्त्रीय बनाने का।

व्यवहारवाद शब्द के आरंभिक प्रयोग गत प्रसंग परईस्टन का कहना है कि इसे उस मनौवैज्ञानिक संकल्पना के अर्थ में लिया गया है जिसकी शुरूआत जे0 बी0 वॉसन ने की थीऔर जिसका उद्वेश्य था शोध कार्य का अंजाम देते समय मनुष्य के उद्वेश्यों विचारों, इरादों इच्छाओं जैसी समस्त व्यक्तिपरक तत्वों को अध्ययन सामग्री की विषय सूची से हटा देना। ईस्टन कीइस अभिव्यक्तिनुसार विषयगत अर्थ संदर्भ के अन्तर्गत व्यवहारवाद राजनीतिक व्यवहार के अध्ययन के लिए सिर्फउन्हीं तत्वों कोउपयोगी मानता है जिसका आधार इन्द्रियॉया यांत्रिाक उपकरणों के माध्यम से प्राप्त प्रेक्षण है। धोरे धोरे मनोविज्ञानवेताओं ने भी यह स्वीकारा कि मानवोचित गुणों एवं व्यक्तिगत अनुभवों का मानवीय व्यवहार को स्वरूप एवं परिणाम की व्याख्या परगहरा प्रभाव पड़ता है जो व्यक्ति की क्रियाओं–प्रतिक्रियाओं की प्रकृति प्रवृति को सदैव एक नया स्वरूप प्रदान करता रहता हैं इस प्रकार मानव व्यवहार के अध्ययन के लिए प्रयुक्त प्रेरणा प्रतिक्रिया प्रतिमान ;जपउनसमे

त्मेचवदेम च्तंकपहउद्ध की जगह प्रेरणा व्यक्तित्व प्रतिक्रिया प्रतिमान ;जपउनसमे व्तहंदपेउ त्मेचवदेम च्तंकपहउद्ध का प्रयोग होने लगा। लेकिन समकालीन व्यवहारवादी राजनीति शास्त्रावेताओं का इस बात पर विशेष बल है कि राजनीतिक व्यवहार के अध्ययन के लिए प्रयोग मूलक राजनीतिविज्ञान की नई व्यवहारवादी अवधारणा में व्यवहारवाद संदर्भित वह प्रवृति नहीं अपनायी जाएगी जिसका प्रयोग वॉसन ने किया है क्योंकि राजनीति शास्त्रियों द्वारा राजनीतिक व्यवहारके यर्थाथपरक अध्ययन में व्यक्तिमूलक प्रेरणाओं और प्रतिक्रियाओं के मध्य पाए जाने वाले संबंधों, व्यक्ति की भावनाओं इच्छाओं, अनुभवों एवं उससे प्रभावित होने वाले व्यक्तित्व प्रासंगिक तत्वों के महत्व की उपेक्षा कभी नहीं की गई। इनका मानना है कि व्यवहारवादी शोधकर्ता शाधप्रसंग में अपना समस्त घ्यानव्यक्ति पर केन्द्रित करता है। डेविड ईस्टन द्वारा अपनी प्रसिद्व कृति (The current meaning of Behaviour) में व्यवहारवादी अवधारणा के आधारक तत्वों एवं लक्ष्यों का उल्लेख किया गया है जिसे इन्होंने बौद्विक आधार शिलाएं (The intellectual foundation stone) की संज्ञा दी हैं ईस्टन द्वारा प्रतिपादित व्यवहारवाद की पूर्व मान्यताएं निम्नांकित है :

1. नियमितताएं (Regularities):– व्यवहारवादी विचारक व्यक्ति के राजनीतिक व्यवहार में समानताओं एवं नियमितताओं के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं। इनकेविचार मे ंराजनीति व्यवहार मे कछ ऐसी प्रवृतियॉ, मनोवकृतियॉ पायी जाती है जिसकी पुनरावृति एवं पुनरूत्पादन सहज ढंग से बार–बारसामने आतारहता है इसलिए इनकी मान्यता हैकि कुछ मामलों में पर्यावरणागत तमाम विभिन्नताओं के बावजूद राजनीतिक व्यवहार के कुछखास आयामों में समानताएं पाई जाती है। राजनीतिक ईकाईयों, संरचनाओं, घटनाओं समस्याओं आदि से संदर्भित राजनीतिक व्यवहार के अध्ययन विश्लेषण के प्रसंग में व्यवहारवादी विश्लेषक व अध्ययनकर्ता मानवव्यवहार मे ंपाइजाने वाली समानताओ– नियमितताओं की खोज करते हैं और उसे राजनीतिकव्यवहार के सामान्यीकरण तथा सिद्वान्तनिरूपण के रूप में अभिव्यक्त करते हैं व्यवहार की नियमितताओं के आधार पर निकालेगए निष्कर्षों के आलोक में व्यवहारवादी मानव व्यवहार का अध्ययन विश्लेषण करते हैं तथा भविष्य संदर्भित संभावनाएं व्यक्त करते है। इनकी

अभिव्यक्तिनुसार इस रूप में अन्ततः राजनीति विज्ञान एक विज्ञान का रूप ले सकता है जिसमें विषय प्रासांगिक विश्लेषण और भविष्य कथन दोनों की क्षमता मौजूद होगी ।

2. सत्यापन(Verification) :– व्यवहारवादियों द्वारा राजनीतिकव्यवहार के विश्लेषणात्मक अध्ययन हेतु एकत्रित आधार सामग्री की जांच पड़ताल एवं पुष्टिकरण की प्रक्रिया ही सत्यापन कहलाता है। इस स्तर पर व्यवहारवादियों द्वारा राजनीतिक व्यवहार के सामान्यीकरण से प्रासंगिक तत्वों, परिवर्त्यों को अनुभवाश्रित रूप से परीक्षण करके सत्यापित किया जाताहै।
3. विधाएं (Techinques) :– व्यवहारवादियों द्वारा अध्ययन विश्लेषण हेतु विषय संदर्भित शोध सामग्री के संग्रहण एवं स्पष्टीकरण करने की प्रविधियॉ यानि कि तथ्य प्रासंगिक आंकड़ा– संकलन सत्यापन, प्रेक्षण, परिभाणनआदि के प्रयोग में वैज्ञानिक प्रविधियों के बड़े पैमाने पर आजमाइश की जोरदार वकालत की गयी है । साथ ही दमदार ढंग से यह स्वीकारोक्ति की गई है कि राजनीतिक व्यवहार संदर्भित शोध कार्यों मे ंऐसी विद्याओं उपकरणे का प्रयोग होनाचाहिए जिसके प्रयोग द्वारा अध्ययनकर्ता अधिक तथ्यपरक, सुसंगत विश्वसनीय एवं तुलनात्मक अध्ययन सामग्री संग्रहीत करन में सक्षम हो सकें । इस प्रसंग में व्यवहारवादी शोधकर्ताओं के लिए प्रयोगात्मक शोध प्रविधियों के संबंध में सतर्कता एवं आलोचनात्मकता की दृष्टि से जिन प्रविधियों के प्रयोग को महत्व देने की बात की गयी है उनमें–बहुचर विश्लेषण(Multivariate Analysis) गणितीय प्रतिरूप (mathematical Model) प्रतिदर्श सर्वेक्षण ;ैचसम ैनतअमलद्ध अनुरूपण; ैपउनसंजपवदद्ध आदि परिष्कृत प्रविधियॉ हैं तकनीकों केप्रयोग के प्रसंग पर व्यवहारवादियों का यह कहना है कि प्रविधियॉ इतनी परिष्कृत और परिमाणीकृत होनी चाहिए कि आधार सामग्री के संकलन,प्रेक्षण, परीक्षण, अभिलेखन, विश्लेषण आदि के लिए शोधकर्ताओं द्वारा ऐसे कठोर शुद्विकरण के साधनों का इस्तेमाल किया जा सके जिससे शोधकर्ता अपने शोध प्रसंगों के संबंध में योजनाऍ बनाने उन्हें क्रियान्वित करने एवं मूल्यांकन करने के क्रम में तथ्य एवं मूल्य दोनों को पृथक करने मे ंसफल हो सके तथा मूल्य संबंधो मान्यताओं को खारिज कर

सक। अर्थात व्यवहारवादी शोध संबंधित अध्ययन सामग्री को अधिक वस्तुनिष्ठ बनाने पर विशेष बल देते है।

4. परिमाणीकरण ;फनंसपपिबंजपवदद्ध :– व्यवहारवादी उपागम की शोध प्रविधियों मे परिमापन एवं परिमाणन का विशेष महत्व है, क्योंकि आधार सामग्री संग्रहण हेतु अन्वेषण, सत्यापन आदि की गुणात्मकता शुद्व परिमापन एवं परिमाणन पर निर्भर करता है जो राजनीतिक व्यवहार के सुनिश्चित और यर्थाथपरक जानकारी का आधार आधय है। व्यवहारवादी अन्य सामाजिक विज्ञानों की तर्ज पर राजनीति विभाग की शोधगत सामग्री के परिमाणीकरणपरविशेष जोर देते हैं और परिमाणात्मकआधार पर ही राजनीतिकघटनाओं समस्याओं मुद्दों केसमाधान व निष्कर्ष तकपहुॅचने की बात करते हैं इस पसंग में घ्यान देने योग्य तथ्य यह है कि व्यवहारवादी शोधकर्ता शोधगत आधार सामग्री व आधार तत्वा के संकलन की प्रकिया में हमेशा नयी खोजों, छानबीन को जारी रखनेकेमहत्व में इस मानसिकता के तहत ही परिवर्तित परिस्थितियों के आलोक में तथ्यपरक यर्थाथपरक नई आधार सामग्री का संग्रहण संभव हो सकेगा।
5. मूल्य (Value) :– डेविड डब्लयू मिनार ;क्ंअपक ॅण डपदंतद्ध जसे व्यवहारवादी की यह स्पष्टोक्ति है कि शोधगत प्रसंगों के आनुभविक विश्लेषण एवं मूल्यांकन में विषयगत मूल्य एवं तथ्य दो अलग अलग संदर्भ है अतः विश्लेष क्रम में उन्हें पृथक–पृथक ही रखना चाहिए। व्यवहारवादियों के विचार में लोकतंत्रा, समानता, स्वाधोनता आदि विषयों का मूल्य बहुत उफॅचा हो सकता है लेकिन उसके सत्यापन की वैज्ञानिक जॉच पड़ताल संभव नहीं है इसलिए शोधकर्ताओं को अपने अध्ययन विश्लेषण के लिए वैज्ञानिक प्रविधियों केप्रयोग में यानीकि आधार सामग्री की छान–बीन मेंमूल्य निरपेक्ष होना अति आवश्यक है। हालांकि व्यवहारवादी इस सच्चाई को स्वीकारते हैं कि कई बार राजनीतिक व्यवहार के विश्लेषण में मूल्य महत्वपूर्ण होते हैं, मसलन मतदान व्यवहार, चुनावी प्रकिया आदि में लेकिन ऐसी परिस्थितियों में शोधकर्ता के लिए यह निर्देश है कि अध्ययन विश्लेषण मे प्रयोगत विद्याओं की बाध्यताओं से वे व्यक्तिगत मूल्यों को पृथक रखें। अर्थात मूल्य के संबंध में तटस्थता की

नीति को अपनाते हुए व्यवहारवादी अवधारणा नैतिक मूल्यांकन को आनुभविक विश्लेषण से पृथक रखने का पक्षधर हैं। इनकी दृष्टि में वैज्ञानिक प्रविधियों के प्रयोग एवं अनुसंधान का वस्तुनिष्ठ होनेके लिए मूल्य निरपेक्षता अति आवश्यक है। इसलिए यह जरूरीहै कि अनुसंधानकर्ता शोधकार्य के समय व्यक्तिगत एवं नैतिक मूल्यों क प्रति तटस्थता का भाव रखें।

6. व्यवस्थाबद्वीकरण;लेजमउंजप्रंजपवदद्धः— व्यवहारवादी अघ्ययन प्रवृति के संदर्भ में व्यवस्थाबद्वीकरण या क्रमबद्वीकरण का तात्पर्य सिद्वान्त निर्देर्शित एवं सिद्वान्ताभिमुख अनुसंधान हैं व्यवसथित अनुसंधाान को व्यवहारवाद के व्यवस्थित ज्ञान का अभिन्न अंग मानागया है। व्यवहारवादियों की दृष्टि में तथ्य औरसिद्वान्त एक दूसरे से अपृशक्कनीय होते हैं इस लिए विस्तारित दृष्टिकोण वाले व्यवहारवादी व्यवस्थित शोधकार्य यानि कि अनुसंधान प्रसंग के क्रमबद्वीकरण को शोध विषय की सफलता केलिए अति आवश्यक मानते है। इनकी मान्यता है कि व्यवहारवादी शोध का अंतिम उद्वेश्य सामान्यीकरण का चहॅुदिस ;बपतबनउरंबमदजद्ध विकास करना ह ताकि ऐसे सिद्वान्तों का अविष्कारहो सके जिनके आधार पर राजनीतिक घटनाओं समस्याओं का विवरण अघ्ययन विश्लेषण एवं अन्य घटनाओं से उसके संबंधों की जांच अधिक परिशुद्वता से करना संभव हो सकेगा। इनकी मान्यताहै कि यि अनुसंधान कार्य सिद्वान्त से अनुप्राणित नहीं है तो वह महत्वहीन हो सकता है और सिद्वान्तयदि आधार सामग्री से समर्पित नहीं है तो वह निरर्थक साबित हो सकता ह। इसलिए व्यवहारवादी सार्थक सिद्वान्त निर्माण के लिए शोध कार्यों को अनिविन्यासित एवं निर्देशित होने पर विशेष जोर देते है। व्यवहारवादियों का उद्वेश्य कारणात्मक संबंधों के आधार पर परस्पर संबंद्व राजनीतिक घटनाओं के संबंध में सामान्य नियमों की खोज करना और उसके अनुरूप सामान्य सिद्वान्तों का निर्माण करनाह ै।

7. शुद्व विज्ञान(Pure Science):— व्यवहारवादी अवधारणा विषय को शुद्व विज्ञान मानते हुए विशुद्व वैज्ञानिक प्रविधियों के प्रयोग में विश्वास व्यक्त करताहैं व्यवहारवादी अपने अनुसंधान कार्य को अधिक कठोर, सुसंगत, सुनिश्चित एवं व्यवस्थित बनानेका प्रयत्न करते हैं और इस संदर्भ में विष्य के वैज्ञानिकीकरण

परजोर देते है। व्यवहारवादी उपागम का प्रयोजन प्राकृतिक विज्ञानों में प्रचलित अध्ययन पद्वतियों का प्रयोग करके एसे राजनीतिक सिद्वान्तों का निरूपण करना है जो राजनीतिक घटनाओं समस्याओं से संदभ्रित राजनीतिक व्यवहार के अध्ययन के लिए ज्यादा से ज्यादा यथार्थ संगत हो सके। व्यवहारवादियों की मान्यता है कि सिद्वान्त निर्माण और परीक्षण दोनें वैज्ञानिक प्रयासों का खास हिस्सा है। राजनीतिकव्यवहार को समझना और उसका विश्लेषण करना सैद्वान्तिक प्रयत्न है जबकि अध्ययनगत ज्ञान को सामाजिक राजनीतिक व्यवस्था की व्यवाहरिकता समस्याओं, मुद्दों, पेचीदगियों के समाधान हेतु अनुभव हैं इस आधार पर शोधगत प्रसंग के सैद्वान्तिकएवं प्रयोगात्मक दोनें पक्षो मे संतुलन बनाए रखनेके लिए व्यवहारवादी विषयगत विश्लेषणात्मक अध्ययन में सकारात्मकता व सरीकता लाने के लिए शुद्व वैज्ञानिक विद्याओं के प्रयोग एवं शुद्व अनुसंधान के प्रबलसमर्थक है।

8. समायोजन (Integration):– व्यवहारवादी अवधारणा के प्रतिपादक एवं समर्थक विभिन्न सामाजिक विज्ञानों के साथ राजनीति विज्ञान के समायोजन पर जोर देतेहै। इस प्रसंग में व्यवहारवादियों की मान्यता है कि एक सामाजिक व्यक्ति की सामाजिक राजनीतिक आर्थिक सांस्कृतिक या सभी गतिविधियों के सीमांकनका चाहे जितना भी प्रयास किया जाय लेकिन वास्तविक सच्चाई यह है कि इनमें से व्यक्ति की कोई भी गतिविधि ऐसी नहीं है जिसका स्वरूप निर्धारण उसके समस्त जीवन को व्यापकपरिपेक्ष्य में देखे बिना किया जा सकता हैं इसलिए व्यक्तिकी एक गतिविधि के अध्ययनकर्ता को परस्पर संबंद्व दूसरी गतिविधि का ज्ञानहोना अति आवश्यक हैं इस आधार पर व्यवहारवादी इस तथ्य पर बल देतेहैं कि राजनीतिक घटनाओं को जानने समझनेके लिए समाज में घटित होने वालीसामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक धार्मिक, साम्प्रदायिक आदि सभी घटनाओं कीजानकारी रखना शोधकर्ताओं केलिए अपरिहार्य हैं इनकेविचार में एक राजनीतिक मनुष्य के राजनीतिक व्यवहारका अध्ययन विश्लेषण उसके सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक धार्मिक व्यक्तित्व से पृथक करके किया जाएगा तो उसके राजनीतिक व्यवहार केवास्तविक स्वरूप कोसमझना व उसकी गहराई में छिपेतत्वों की जानकारी प्राप्त करना संभव

नहींहोगा । यानीकि व्यवहारवादी व्यक्ति के राजनीतिक जीवन की जमीनीसच्चाई को जानने के लिए उसके सामाजिक जीवन के विभिन्न आयामों को जााने की अपरिहार्यता के मजबूत समर्थक हैं,इसीलिए वे विषय के अन्तरानुशासनिक अध्ययन के पक्षधर है।

डेविड ईस्टन द्वारा प्रतिपादित उपर्युक्त बौद्विक आधार स्तम्भों में व्यवहारवादी उपागम में प्रयोग किए जाने वाली सभी स्तरों का समाकलन हैं राजनीतिक विज्ञान के अध्ययन विश्लेषण के प्रसंग में व्यवहारवादियों एवं परम्परावादियों के मध्य निरन्तर चलते रहने वाले मत–मतान्तर की वजह से ईस्टन द्वारा प्रस्तुत उपर्युक्त व्यवहारवादी अवधारणा केसभी स्तरों को भी गंभीर आलोचनात्मक चनौतियों का सामना करना पड़ा। लेकिन दोनों दृष्टिकोणों के बीच मतवैभिन्नताओं का यह कदापि अर्थ नहीं हैकि दोनों एक दूसरे के विरोधो है।। यथार्थतः दोनों के बीच का मतभेद बहुत गहरा नहीं है। दोनों विचारधाराओं के बीच मूलभूत अन्तर अध्ययन प्रविधियो के इस्तेमाल का हैं हालांकि परम्परावादियों का भी यह मानना है कि व्यवहारवादी अध्ययनतकनीक की सहायता से विषयगत अध्ययन में बहुत सारी उपलब्धियों प्राप्त की जा सकती हैं वस्तुतः इस प्रसंग में एक मतैक्य उभरता दिखाई दे रहा है कि राजनीतिक व्यवहार के व्यवहारात्मक पक्ष के तात्विक अध्ययन के लिए नसिर्फव्यवहारवादी उपागमों के साथ परम्परावादी उपागमों का प्रयोगउपेक्षित है अपितुउन समस्त विद्याओं संकल्पनाओं का ज्ञान भी अध्ययनकर्ताओं के शोध प्रसंग में अति सहायक होगा जिनका विकास निरूपण एवं प्रयोग अन्य सामाजिक विज्ञानों एवं प्राकृतिक विज्ञानों मेंकिया जा रहा है।

विदुषी बार्बरा स्मिथ का व्यवहारवाद

व्यवहारवादी अवधारणा की विशेषताओं का विवरणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करते हुए बार्बरा स्मिथ ने व्यवहारवाद के जिन सिद्वान्तों का उल्लेख किया हैवो निम्नांकित हैं:–

1. राजनीति विज्ञान को सभी अर्थों में शुद्व विज्ञान बनाने के लिए व्यवहारवादी अवधारणा का उद्वेश्य राजनीति विज्ञान के अध्ययन के लिए क्रमबद्व

अनुभकश्रित सिद्वान्तों काविकास एवं निरूपण करना है तथी रजानीतिक व्यवहार का तत्वतः अघ्ययन विश्लेषण संभव हो सकेगा। व्यवहारवाद अपने अघ्ययन में वर्णनात्मक तत्वों की अपेक्षा कारणात्मक तत्वों को प्रधानता देता है और इस सच्चाई में विश्वास व्यक्त रताहै कि मानव व्यवहर में कुछ नियमितताएं समानताएं निश्चित रूप से पाई जाती हैं इनकी दृष्टि में राजनीतिक प्रसंगों पर अनुसंधान करने वाले शोधकर्ताओं के लिए इन नियमितताओं समानताों का ज्ञान अपरिहार्य है।

2. व्यवहारवादी अवधारणा मे ंराजनीति विज्ञान मे किए जाने वाले शोधकार्यों को सिद्वान्तोंमुखी होना जरूरीबताया गयाह ै साथ ही यह भी कहा गया है कि अनुभवजन्य तथ्यों एवं सिद्वान्त के बीच परस्पर गहरा संबंध होना अति आवश्यक हैं अनुभववाद का संकुचित दृष्टिकोण एवंत थ्य संकलन की क्रमहीनता व्यवस्थित सामान्य सिद्वान्त के विकास में गतिरोध पैदा करता हैं व्यवहारवाद आनुभविक तथ्यों का सिर्फ वर्णनात्मक ही नहीं अपितु व्यापक व्याख्यात्मक संदर्भ प्रस्तुत करनेका समर्थक हैं। इसकी दृष्टि में अनुभवजन्य अघ्ययन के बिना निरूपित सिद्वान्त प्रयोजनहीन व निरर्थक हैं, क्योंकि व्यापक स्तर पर व्याख्यात्मक संदर्भ से पृथक आनुभविक कथन सिद्वान्त निरूपण क प्रसंग में महत्वहीन है।
3. व्यवहारवादी प्रवृति विश्लेषणात्मक अघ्ययन क्रम में विषय संदर्भित तथ्यों एवं मूल्यों की पृथकता परविशेष बल देता है। इस प्रसंग में इनका तर्क यह है कि शोध प्रसंग से संदर्भित मूल्यात्मक कथनों की सत्यता को वैज्ञानिक प्रविधियों द्वारा साबित करना संभव नहीं है जबकि तथ्यात्मक कथनों की सत्यता क जांच वैज्ञानिक तकनीकों द्वारा किया जाना संभव है। इसलिए व्यवहारवादियों के विचार में विषयगत अघ्ययन विश्लेषणमें तथ्यगत एवं मूल्यगत प्रश्नों के मल के परिणामस्वरूप मूल्यांकन एवं निष्कर्ष पर पहुॅचने के समय भ्रम की स्थिति उत्पन्न होगी ।
4. व्यवहारवादियों की ये मान्यता है कि राजनीति प्रासंगिक अधिकांश सवाल मुद्दे समस्याएं स्वाभाविक रूप से अर्न्तविषेयक होता है। इसलिए राजनीति संदर्भित समस्याएं सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक मनौवैज्ञानिक संदर्भों से जुड़ी

होती हैं इस आधार में आधारभूत समानता की स्थिति को स्वीकारता है और विषयगत अध्ययन के लिए अन्तर्विषयक पद्वति का समर्थन करता है।

5. व्यवहारवादी प्रवृति राजनीति के व्यवहारपरक विश्लेषणात्मक अध्ययन केलिए उन्हों नपी तुली स्पष्ट और परिष्कृत पद्वतियों के प्रयोग का समर्थक है जिनका इस्तेमाल मूलतः प्राकृतिक विज्ञानों के अध्ययन के लिए किया जाता है क्योंकि इन प्रविधियों के व्यवहार पर ही निष्कर्षों की विश्वसनीयता निर्भर करती है।
6. राजनीति के यर्थाथपरक अनुभवाश्रित व्याख्या के लिए व्यवहारवादी अवधारणा अपने अध्ययन का प्रधानांग विषय मनुष्य के व्यक्तिगत एवं सामूहिक व्यवहार को बनाने पर विशेष जोर देता है न कि संबंद्व संस्थाओं या संगठनों केसंरचनात्मक आयामों को।

विदुषी बार्बरा स्मिथ द्वारा प्रतिपादित व्यवहारवादी अवधारणा से संदर्भित उपयक्त विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि स्मिथ केविचार में व्यवहारवाद आधुनिक राजनीतिक विज्ञान का ऐसा परिष्कृत व्यवहारत्मक रूप है जो सिद्वान्त और प्रासंगिक तथ्यों की अन्योन्याश्रिता को खुले मन से स्वीकारताहैं इस अर्थ में व्यवहारवाद राजनीति व्यवहार की नियमितताओं समानाओं की खोज, उनका सामान्यीकरण परीक्षण एवं प्रयोग में तथ्यों तथा मूल्यों की पृथकता का समर्थक हैं । व्यवहारवादी तथ्यों का परिणामवाचक ;फनंदजपजंजपअमद्ध अध्ययन करने एवं इस हेतु सांख्यिकीय विद्याओं के प्रयोग का जोरदार समर्थन करते दिखाई देते हैं व्यवहारवादी आधनिक राजनीति विज्ञान पर मनोविज्ञान जीव विज्ञान और अर्थ संख्याशास्त्र के विशेष प्रभाव को स्पष्ट रूप में स्वीकारता है।

प्रो0 एस0 पी0 वर्मा ने भी व्यवहारवाद की व्याख्या करते हुए कहा है कि 'व्यवहारवाद केवल अध्ययन का एक दृष्टिकोण है जिसका उद्वेश्य राजनीतिक जीवन के आनुभाविक पहलुओं का स्पष्टीकरण देते हुए राजनीति के ज्ञान को विस्तारित करना है।'

उपयुक्त विवेचित विचारों के सिंहाविलोकन के रूप मे यह कहा जा सकता है कि व्यवहारवादी अवधारणा की खास पहचान उसके आनुभविक

अस्तित्व से जुड़ी है । यह एक ऐसी अध्ययन प्रवृति है जिसका उद्वेश्य वैज्ञानिक और परिष्कृत विद्याओं के लिए व्यवस्थाबद्व अनुभवाश्रित सिद्वान्त का निर्माण करना है जिसके माध्यम से राजनीतिगत यथार्थ से संबंधित अध्ययन की समझदारी में वृद्वि हो सके। 20वीं शताब्दी की सबसे ज्यादा प्रचलित और बोधयुक्त अवधारणा होने के बावजूद इसके स्वरूप निर्धारण एवं व्याख्या निरूपण के संदर्भ में विद्वतजनो के बीच मतैक्य नहीं दिखता है जिसकी स्पष्टरोक्ति उपर्युक्त विवेचित विद्वानों के विचारों में सन्निहित मान्यताओं के प्रसंग में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

मूल्यांकन(Evaluation)

20वीं शताब्दी में विशेषकर द्वितीय विश्वयुद्व के बाद यानी कि 1940–60 के मध्य का समय व्यवहारवाद का चर्मोत्कर्ष काल कहा जाता है। परम्परावादी संकल्पना के खिलापफ गंभीर विरोध आन्दोलन के रूप व्यवहारवाद अवधारणा एक तात्विक अन्वेषण है, अभिनवीकरण है एक गंभीरचुनौती है तथा राजनीतिक व्यवहार के तत्वतः अध्ययन को दिशा में एक सकारात्मक सार्थक पहल है। इस रूप में व्यवहारवाद को एक सुधार आन्दोलन की संज्ञा भी दी जातीहै जो अपनीस्वरूप व प्रकृति प्रवृति संदर्भित अनिश्तिता की स्थिति को पार करके स्पष्ट एवं निश्चित स्वरूप प्राप्तकर चुका है।

व्यवहारवादियों की यह मान्यता है कि प्राकृतिक एवं सामाजिक विज्ञानों केबीच गुणात्मक समानता और निरन्तरता पाई जाती है, इसलिए व्यवहारवादी राजनीति के गहन अध्ययन के लिए वैज्ञानिक प्रविधियों का प्रयोग करके राजनीति को व्यापक अर्थबोध प्रदान करनाचाहते हैं तथा राजनीतिक प्रसंगां की तात्विक गहराई का वास्तविक अध्ययन करनेएवं राजनीतिक घटनाओं समस्याओं के अर्थ संदर्भ केस्पष्टीकरण हेतुसुनिश्चित सुसंगत नियमों, सिद्वान्तों का निर्माण करना चाहते है। व्यवहारवादियों द्वारा विषयगत अध्ययन विश्लेषण में भौतिकविज्ञान की तर्ज पर पर्यवेक्षण, मापने एवं सत्यापन आदि प्रविधियों को बहुत महत्व दिया गया है लेकिन वे इस तथ्य को भूल जाते हैं कि भौतिक व्यवहार और मानव व्यवहारमें गुणात्मक अन्तर होताहै।

व्यवहारवादी क्रान्ति के परिमाणस्वरूप राजनीति विज्ञान की विषय वस्तु एवं अध्ययन पद्वति में आधारभूत परिवर्तन आया। व्यवहारवादी आन्दोलन के चर्मोत्कर्ष कालावधि में कतिपय व्यवहारवादियों की यह धारणा थी कि राजनीति के अध्ययन के लिए आनुभाविक पद्वति के प्रयोग से राजनीतिक प्रासंगिक अध्ययन पूर्णतः प्रामाणिक पूर्णप्रज्ञ एवं शुद्व रूप से वैज्ञानिक बन जाएगा । यह मानसिकता ही व्यवहारवादियों कीसबसे बड़ी भूल साबित हुई जिसके परिणामस्वरूप इस अवधारणा के प्रतिपादक ही आगे चलकर इस अध्ययन योजना के आलोचक हो गए। वस्तुतः मानव व्यवहार परिस्थिति, पर्यावरण, संघर्ष, प्रतिस्पर्धा, द्वन्द्व, भ्रम, तर्क, भवना, दुराग्रह, स्वार्थ, प्रेम घृणा आदि मनोवृतियों से प्रभावित होता है जो किसी भी वैज्ञानिक प्रयोगशाला एवं वैज्ञानिकप्रविधियों के अध्ययनका विषय नहीं बन सकता है। मनुष्य के राजनीतिक व्यवहार का वस्तुपरक अनुभवाश्रित विश्लेषणात्मक अध्ययन–अनुसंधान समाय विज्ञान की विषयगत व प्रतिधिगत सीमाओं के दायरे में रहकर ही सुसंगत ढंग से किया जा सकताहै जिसमें प्राकतिक विज्ञानों जैसी सुनिश्चितता सुस्पष्टता का हमेशा अभाव रहेगा।

व्यवहारवाद की आलोचनाएँ(Criticisms of Behaviouralism)

जहॉ तक इस नई अध्ययन प्रकृति का संदर्भ है इस तथ्य से इन्कार नहींकिया जा सकताहै कि विषयगत अध्ययन हेतु व्यवहारवादी अवधारणा के प्रयोग से आधनिक राजनीति विज्ञान की विषयवतुत अध्ययन विद्याओं, साधनों, सम्पर्क सूत्राों एवं निष्कर्षों में क्रान्तिकारी परिवर्तन आयाह ै लेकिन साथ ही यह भी सत्य है कि राजनीति राजनीतिक मुद्दों समस्याओं राजनीतिक व्यवहार का तथ्यपरक यर्थाथपरक विश्लेषणात्मक अध्ययनकरते हुए जितनीशीघ्रता से यह अवधारणा प्रशंसनीय उंचाईयों के शिखर पर पहुॅच करआधनिक राजनीति विज्ञान को महिमामंडित करने के प्रयास में अपना कीर्तिमान व कीर्तिस्तंभ स्थापित करने में सफल साबित हुआ है उतनीही तेजी

से इस अवधारणा की अधिमान्यताएं कीर्तिशेष होने लगी और अवधारणा का अस्तगमन व खंडन भी आरंभ हो गया। इस अवधारणा का चरमकाल 1940. 60 का माना जाताहैं । साठ से सत्तर के दशक के आसपास अवधारणा को कड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ा । व्यवहारवादी अवधारणा के वैचारिक महल परआलोचकों द्वारा आरोपों प्रत्यारोपों के इतने वारकिए गए ि कइस गंभीर शब्द वेधो वाणों को नहीं झेल पाने की वजह से इस अवधारणा का पूरा महल ही धराशायी हो गया जिसके अवशेष से ही 1970 के दशक मे ंनये विचारबंध के रूप में उत्तर व्यवहारवादी अवधारणा के वैचारिक अस्तित्व का सृजन हुआ जो समकालीन परिस्थिति के साथ पोषित– पल्लवित होकरअपना ऐतिहासिक सपफरतय करते हुए वर्तमानचरण में पहुॅचा है।

राजनीति शास्त्र के इतिहास में पिछले किसी भी वैचारिकी पर इतने आलोचनात्मक कुठाराघात नहीं हुए जितना कि व्यवहारवाद पर । परम्परावादी विचारक तो प्राथमिक स्तर से ही इस अवधारणा के समस्त आयामों के कट्टर आलोचक रहेहैं लेकिनइस प्रसंग का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह हैकि इसकीअवधारणागत व प्रविधिगत त्रुाटियों की वजह से व्यवहारवाद के प्रणेता डेविड ईस्टन, र्राबर्ट डॉल जैसे अवधारणा प्रतिपादक एवं प्रवर्तक व्यवहारवादी भीइसके कटु समालोचक हा गए। एक तरपफ जहॉ व्यवहारवादी उपागम अपनी नई विद्याओं, माध्यमों, सम्पर्क सूत्राों का बड़े पैमाने पर उपयोग करके आधनिक राजनीति विज्ञान की विश्लेषणात्मक क्षमता को अनुभवपरक बनाता है वहीं इसके अस्तित्व में कुछ कमजोरियों भी मौजूद है जिसकी वजह से अवधारणा का आलोचनाओं के कड़े दौर से गुजरना पड़ा।

यद्यपि व्यवहारवादी अवधारणा का अपने विकास के विभिन्न चरणों में राजनीति एवं राजनीतिक व्यवहार के अनुभवजन्य अध्ययन में महती योगदान रहा है । राजनीतिक प्रसंगों के मर्मान्वेषण (Investigation into the secret) में इस अध्ययन प्रवकृति की भ्मिका काफी सार्थक रही है तथापि आलोचकों का यह कहना ह कि राजनीतिक व्यवहार एवं राजनीति की जटिलताओं को जानने समझने की दृष्टि से यह अवधारणा यथेष्ट नहीं हैं इस संदर्भ म राजनीति के मर्मज्ञ मूलपफोर्ड सिबली (Mulford Sibly) ने लिखा है कि

राजनीतिक को समझने परखने के लिए कलाकार की विशिष्ट अर्न्तदृष्टि का होना उतना ही आवश्यक है जितना कि वैज्ञानिक सुनिश्चितता का अंगों के विश्लेषण के अतिरिक्त संपूर्णता के साथ अंगों के अन्तः संबंधों को जानना भी आवश्यक है। व्यवहारवाद के मूल्य निरपेक्षता दृष्टिकोण पर आगे सिवली ने लिखा है व्यवहार का प्रयोग अनिवार्यतः मूल्य संबंधो नीतियों के संदर्भ में ही किया जा सकेगा जिसका समर्थन केवल व्यवहारवादी तकनीकों द्वारा संभव नहीं है।

व्यवहारवादी अवधारणा द्वारा राजनीति के अघ्ययन क्षेत्र काविस्तार एवं समाजशास्त्रा, मनौविज्ञान, मनोरोग शास्त्र आदि के अघ्ययन के लिए विकसित की गई संकल्पनाओं का राजनीति के अघ्ययन के लिए किए जाने वाले प्रयोगों के संबंध में सिबली की अभिव्यक्ति है कि राजनीति के अघ्ययन के लिए स्पष्ट और मूल्ययुक्त संकल्पनाओं को साथ लिए बिना आगे बढ़ने का परिणाम यह हुआ कि व्यवहारवाद के इस युग में राजनीति विज्ञान का नेतृत्व समाजषास्त्रकेहाथों में है।

व्यवहारवाद एवं व्यवहारवादी परम्पराएं

व्यवहारवाद (Behaviourism) एवं व्यवहारवादी परम्परा (Behaviouralism) दोनों शब्दों के मघ्य भेद का स्पष्टीकरण आवश्यक है। व्यवहारवाद एक मनौवज्ञानिक सिद्वान्त है जिसकी यह मान्यता है कि मानव व्यवहार के अघ्ययन का एकमात्रा आधार प्रेक्षण योग्य व्यवहार है अतः मानसिक परिघटनाओं के संबंध में सभी वक्तव्य जैसे नीचता, प्रेरणाएं, विश्वास, आस्था आदि निरर्थक है क्योंकि वह अन्तरापेक्षी ज्ञान पर आधारित है जिसका प्रायोगिक विधि से सत्यापन नहीं किया जा सकता है लेकिन व्यवहारवादी परम्परा सामाजिक परिस्थितियों की व्याख्या का एक प्रकार है जिसमें संस्थाओं केविवरण की अपेक्षा प्रेक्षित व्यवहार ;ब्ेमतअमक ठमींअपवनतद्ध पर विशेष जोर दिया जाता है। व्यवहारवादी दृष्टिकोण का परम्परा व्यवहारवाद के दृष्टिकोण से भिन्नता का आशय यह हैकि जहॉ व्यवहारवाद मनौवैज्ञानिक सिद्वान्तों के माघ्यम से व्यक्तिगत व्यवहार के अघ्ययन का दावा करता है वहीं व्यवहारवादी परम्परा का निहितार्थ समाज के सामूहिक व्यवहार का अघ्ययन

करना हैं यह व्यक्तिगत व्यवहार के संबंध में मनोविज्ञान कासिद्वान्त नहीं है बल्कि इसमें सामूहिकताओं के संबंध में समाज विज्ञान का वक्तव्य निहित होता है।

मानकात्मक राजनीतिक सिद्वान्त के प्रबल समर्थक पफ्रैंक ठाकुरदास के शब्दों में व्यवहारवादी प्रकृति की दो सीमाएं है– यह उच्च प्रकार का समानीकरण कभी पैदा नहीं कर सकता हैं अर्थात जो एक ओर प्राकतिक विज्ञानों की परिशुद्वता के निकट हो और दूसरी ओर स्वतंत्राता समानता न्याय और अधिकारों के उच्च उद्वेश्यों की व्याख्या के योग्य नहीं है जो पूर्व और पश्चिम की विश्व की प्रणालियों में निहित है जिन्हें आमतौर पर विचारधाराएं या सिद्वान्त कहा जाता है यह राजनीतिक विश्वास की अर्न्तवस्तु है जो एक तरह से किसी भी राजनीतिक व्यवस्था का नियंत्राण या मार्गदर्शन करने वाली आत्मा हो सकती है। आगे पफेंक ठाकुरदास ने कहा है कि व्यवहारवादियों की अर्थहीन मान्यता है कि 1950से पूर्व राजनीति विज्ञान की कोई स्पष्ट बौद्विक स्थिति नहींथी। यद्यपि उनकी इस मान्यता को कुछ हद तक स्वीकार किया जा सकता है कि यह एक बाहुलवादी विषय था जिसके मूल तत्वों के संबंध में कोई सहमति नहींथी।

व्यवहारवाद के बुनियादी तत्व

(Basic Fundamental of Behaviourlism)

व्यवहारवाद राजनीतिक व्यवहार की व्याख्या शुद्व व्यवहारपरक शब्दों में करनेका हिमायती है Heing Eulau, Somit and Tanelhaus,Easton Almond,Robeat Dahl, Deutesh, D.M. Ricei आदि व्यवहारवादियों द्वारा अपनी अपनीकृतियों में व्यवहारवाद के संबंध में दिए गए वक्तव्यों के आधार पर इस चेतनीय संकल्पना के बुनियादी विषयतत्व के रूप में मीमांसित कुछ तथ्यनिष्ठ आधारतत्व अपनी तादात्मक ;प्कमदजपजलद्ध पूरी मजबूती से उपस्थित कराते हैं जो निम्नांकित है :–

- परीक्षण योग्यता (Experiment capability) k(operational) होना चाहिए। अवधारणा की दृष्टि से भले ही वो कठोर हो लेकिन व्यवहारत्मक रूप में उनकी सार्थकता अति आवश्यक है। इसी पृच्छा (Interrogation question) को बड़ी ही

सावधानी से विकसित सिद्वान्त सूत्राों के माध्यम से आगे बढ़ना चाहिए। यही शोधगत अध्ययन को परिचालन योग्य अनुमान प्रदान करता है जिसका परीक्षण प्रयोगमूलक ऑकड़ों के आधार पर किया जा सकता हैं इस नवीन दृष्टिकोण के अनुयायियों द्वारा राजनीति संदर्भित जो प्रस्ताव या वक्तव्य दिए जाते हैं वो ऐसे होने चाहिए कि उनकी पुष्टि की जा सके या उसका खंडन किया जा सके तथा जिससे राजनीति विज्ञान के ज्ञानभंडार को समृद्व किया जा सकता हैं अवधारणा के संबंध में विवेचित उपर्युक्त बुनियादी तत्व का अभिप्राय यह है कि मौलिक रूप से व्यवहारवादी संकल्पना के प्रत्येक पक्ष एवं प्रत्येक स्तर के लिए परीक्षण की योग्यता एवं क्षमता के तत्व बेहद महत्वपूर्ण है।

- मिथ्या प्रमाण योग्यता (False evidence capability) इस परीक्षणद्वारा राजनीति विज्ञान के स्वीकृत अध्ययन भडार से कई गलत धारणाओं मान्यताओं को हटाया जा सकता है । इसकी मान्यता है कि वैज्ञानिकप्रतिधियॉ सिर्फविषय के लिए नये ज्ञानका सृजन ही नहीं करती है अपितुइन विधियों का उद्वेश्य बेकार की सामग्री को ज्ञान भंडार से पृथक करना भी है। इस प्रसंग पर डायश ने यह स्वीकार किया है कि राजनीति विचारक निहितार्थ विश्लेषण करता है।
- निरन्तर परीक्षण योग्यता ;ब्वदजपदनवने मगचमतपउमदज बंचंइपसपजलद्ध –व्यवहारवादी यह हमेशा याद रखते हैं कि जिन मान्यताओं को वो सही मानकर प्रस्तुत कर रहे हैं उसे समीक्षकों द्वारा कभी भी गलत करार दिया जा सकता है। इसलिए व्यवहारवादी सिद्वान्तकार को हमेशा खुले दिमाग से उनआलोचनाओं को स्वीकार करनेके लिए तैयार रहनेका सुझाव दिया जाताहै। सिद्वान्तकरोंको हमेशा नये विकास, नये विश्वास को अपनाने के लिए तैयार रहनाचाहिए। यह अपवाद के अध्ययन क्षेत्रा मेंसंदेहावाद की संभावना का भी अपना एक निर्धारित क्षेत्रा है।
- रीति विज्ञान (Method of legislation)- यह विषय तत्व इस तथ्य से प्रासंगिक है कि व्यवहारवादी जिसे विज्ञान की संज्ञा देना चाहते हैं वह उनकी उपलब्धियों का प्रमाण नहीं अपितु इस वजह से है कि उनकी

कृतियॉ एवं शोधकार्य प्राकृतिक विज्ञानों की रीति विज्ञान संदर्भित धारणाओं एवं मान्यताओं से संबद्व प्रतिमानों के आधार पर तैयार किया जाता है।

- वैज्ञानिक समुदाय (Scientist community)- एक विवेकसंगत वैज्ञानिक समुदाय इस संकल्पना का प्रतिनिधित्व करता है। इस मायने में राजनीतिक विद्वानों की प्रशंसा की जाती है कि उनकी अन्तरानुशासनिक वैज्ञानिक अध्ययन प्रवृति की वजह से विषयगत अध्ययन को अधिकतम विश्वसनीय ज्ञानके दावों का व्यवस्थाबद्व विशद् भंडारप्राप्त हुआ है। वैज्ञानिक समुदाय द्वारा विषयगत अध्ययन अनुसंधान को ज्यादा से ज्यादा वैज्ञानिक और सटीक बनाने का प्रयास किया गया हैं । राजनीतिक घटनाओं से सबंध तथ्यों को वैज्ञानिकता की कसौटी पर कस कर उनकी जांच पड़ताल का प्रयास किया जाता है। इस कार्य के लिए वैज्ञानिक समुदाय द्वारा प्राकृतिक विज्ञानों एवं अन्य सामाजिक विज्ञानों से आयात करके अध्ययन अनुसंधानकी नई तकनीकी प्रयोग में लायी जाती है।
- व्यवहारवादियों की यह मान्यता है कि राजनीतिक सिद्वान्त उसी सीमा तक सार्थक है जहॉ तक इसका सत्यापन किया जा सकता हैं इनके मतानुसार अच्छे राजनीतिक सिद्वान्त की उपयोगिता के लिए यहआवश्यक है कि वह राजनीतिक परिघटनाओं को व्यवस्थाबद्व करके उसकी व्यवहारात्मक व्याख्या प्रस्तुत करे और उसके पूर्वानुमान की अभिव्यक्ति करे।
- व्यवहारवादियों की यह मंशा रही है कि यह अवधारणा नयी प्रकारकी अध्ययन सामग्री का विश्लेषण करे तभी इनके द्वारा राजनीति के अध्ययन में राजनीतिक ईकाईयों से संदर्भित व्यक्ति और समूह के व्यवहार संबंधित अध्ययन में विशेष रूचि ली गई है।
- व्यवहारवादियों द्वारा राजनीतिक परिघटनाओं के अध्ययन के लिए नई प्रविधियों के प्रयोग पर विशेष जोर दिया गया है और इस कार्य हेतु सर्वेक्षण,अनुसंधान, सांख्यिकीय विश्लेषण और अनेकानेक प्रकार के ज्ञान संबंधो कार्यों को अपने शोध कार्य में शामिल किया गया है।

- व्यवहारवादियों को राजनीति वैज्ञानिक को से यह अपेक्षा थी कि वे विभिन्न सामाजिक और प्राकृतिक विज्ञानों से सामग्री एकत्रा करके व्यवस्था, उप व्यवस्था, निर्णय, समूह, भूमिका, विशिष्ट वर्ग, जैसी नई अवधारणाओं को अपने अघ्ययन में महत्वपूर्ण स्थान द।
- व्यवहारवादियों द्वारा सामान्यीकरण विषय पर कार्य करने का समर्थन किया गया हैजो उनकी दृष्टि में राजनीतिक परिघटनाओं के मघ्य विद्यमान संबंधों की व्यवहारात्मक व्याख्या करने हेतु कारगर उपकरण है तथा राजनीति विज्ञान की अघ्ययन सीमा के विस्तार की दृष्टि से भी कापफी महत्वपूर्ण हैं इस प्रकार व्यवहारवादियों द्वारा अधिक संकीर्ण रूप में परिस्थितिबद्व अन्वेषण अनुसंधान में परिकल्पना और सैद्वान्तिक प्रस्ताव दोनों को पुनः स्थापित किया गया है।
- संक्षेप में, बुनियादी विषयतत्व के रूप में व्यवहारवादी राजनीति विज्ञानके अघ्ययन क्षेत्रा में नई प्रविधियों, नये सैद्वान्तिक लक्ष्यों का संचार करना चाहते हैं ताकि वे समग्र विकास करने में सफल हो सके और इस महान उद्वेश्य हेतु विशिष्ट प्रस्तावों, संपर्क सूत्राों साधनों एवं निष्कर्षों को एकत्रिात करते रहने का अभियान जारी रख सकें।

स्मरणीय संकेत

- व्यवहारवादी दृष्टिकोण को लोकप्रिय बनाने का श्रेय अमेरिका के पफोर्ड पफाउन्डेशन को है।
- पफोर्ड संस्थान के कार्यकर्ताओ द्वारा तैयार किये गए एक पक्ष में यह स्पष्ट किया गया है कि मानव व्यवहार में बाहरी क्रियाएं एवं भीतरी आचरण मसलन आस्था, विश्वास, उम्मीद, प्रेरणाएं, रूझान आदि शामिल है जिनका संबंध आर्थिक समााजिक शैक्षणिक राजनीतिकया वैयक्तिक समस्याओं से होता है।
- व्यवहारवाद कई प्रकार की अघ्ययन सामग्री का संकलन एवं विश्लेषण करता है जिस परइस वैचारिक क्रान्ति के आने क पूर्व किसी का घ्यान नहीं गया था। यह अवधारणा समसामायिक व्यवहारपरक रानजीतिक सिद्वान्त का

सार संग्रह है जो सिद्वान्तकार के विचारों का प्रतिनिधित्व करता है औरउनके विचारों का प्रतीक है।

- व्यवहारवाद व्यक्तिगत एवं सामूहिक व्यवहार के अघ्ययन पर अपना घ्यान केन्द्रित करके राजनीतिक के यर्थाथपरक विश्लेषण का सकारात्मक प्रयास हैं इसके माघ्यम से यह पता लगाया जा सकता है कि राजनीतिक संस्थाएं समाज के लिए क्या कर रही है और समाज को राजनीतिक व्यवस्था से क्या अपेक्षाएं है।
- व्यवहारवाद अघ्ययन के लिए नयी विधि का समर्थन एवं प्रयोग करता है जिसके अन्तर्गत अनुसंधान सर्वेक्षण प्रेक्षित सामग्री तथा सटीक निष्कर्ष हेतु अनुसंधान कार्य से संबंद्व अन्य विषयों पर सांख्यिकी का प्रयोग करना चाहता है।
- व्यवहारवाद सामाजिक विज्ञानों विशेषकर समाज विज्ञान और कुछ हद तक प्राकृतिक विज्ञानों से लिए गए व्याख्यात्मक कार्यों का प्रतिमान हैं यह संकल्पना मूलतः विशिष्ट वर्ग की भूमिका, प्रभाव, नेतृत्व, जनमत, नीति निर्माण, निर्णय प्रक्रिया, विभिन्न उप–व्यवस्थाओं की संरचनाएं, गतिविधियॉ, कार्यशैली, राजनीतिक संस्कृति राजनीतिक सहभागिता राजनीतिक विकास आधुनिकीकरण जैसे गत्यात्मक राजनीतिक प्रसंगों के तथ्यपरक यर्थाथपरक अघ्ययन विश्लेषण पर बल देता है।
- व्यवहारवाद अवधारणा राजनीति प्रासंगिक उन समस्त परिघटनाओं का अघ्ययन करने के लिए प्रयारत रहने की बात स्वीकारता है जिसका संबंध व्यक्ति के प्रेक्षित तथा प्रेक्षणीय व्यवहार से होता है।
- यह अवधारणा राजनीतिक परिघटनाओं के सत्यापन योग्य वैज्ञानिक व्याख्याएं प्रस्तुत करता है तथा उसके परीक्षण का दावा भी करता है।
- व्यवहारवादियों का उद्वेश्य एकत्रित अघ्ययन सामग्री का सामान्यीकरण करना और वैसे प्रतिमानों की रचना करना है जिसके माघ्यम से वैज्ञानिक यथातथ्य (Precise) के आलोक में राजनीतिक प्रक्रियाओं की व्यवहारपरक व्याख्या की जा सके। इस संकल्पना का उद्वेश्य राजनीति को विज्ञान का

स्वरूप प्रदान करना है और विषयगत अध्ययन में एक नई भावना का संचार करना है ताकि यथासंभव इस दृष्टिकोण को इतना अधिक तथ्यवादी यथार्थवादी और सुस्पष्ट बनाया जा सके जिससे इस विषय को प्राकृतिक विज्ञानों के समकक्ष की स्थिति प्राप्त हो सके।

- यह अवधारण विषय तत्वों के परिमाणन एवं क्रियात्मक परिभाषाओं के सर्जन (creation) पर विशेष जोर देता है।
- व्यवहारवादी शोधकर्ता अनुसंधान के विषय चयन के समय या अनुसंधान कार्य करते समय समस्त शोध प्रसंग की विद्याओं को अपने निजी मूल्यों के प्रभाव से पृथक रखने का प्रयास करता है।
- इस अवधारणा की अध्ययन प्रवृति अन्तरशास्त्रीय है इसलिए अध्ययनकर्ता समाज विज्ञान, मनोविज्ञान, मानवविज्ञान, अर्थषास्त्र आदि में प्रयोगगत प्रत्यययों, प्रतिमानों, सिद्वान्तों, दृष्टिकोणों, उपागमों के साथ सीधा सम्पर्क स्थापित करके विषयगत शोधकार्य को सुसंगत व सुस्पष्ट बनाने के लिए बड़े पैमाने पर इनका प्रयोग करता है।
- यह अवधारणा तुलनात्मक अनुसंधान पर विशेष जोर देता है और जहॉ तक संभव हो सके व्यवाहरिक स्तर पर इसके विद्वतजन सांस्कृतिक विविधता वाले देशों को अपने तुलनात्मक अध्ययन में ज्यादा महत्व देते हैं।
- इस अवधारणा के अन्तर्गत व्यवहारवादी एक ऐसी प्रभावकारी व्यवस्था के निर्माण का प्रयत्न करते हैं जिसमें वैज्ञानिक शोध तकनीकों द्वारा निकाले गए निष्कर्षों के आधार पर पद्वति में वांछित सुधार के उपयों की भी प्रस्तुति की जा सके।
- व्यवहारवादी दृष्टिकोण के परिमाणस्वरूप राजनीतिक विज्ञान के अध्ययन क्षेत्रा का व्यापक विस्तार हुआ है और राजनीतिक सतत एवं मतदाता दोनों के राजनीतिक व्यवहार की यथार्थता को समझने में तथा इसकी आधारगत व्याख्या करने में विद्वतजनों को कापफी सफलता मिली है।
- व्यवहारवाद की कटुल आलोचना करते हुए इसे ज्ञान के झूठे सिद्वान्त पर आधारित ऐसी संकल्पना की संज्ञा दीगई है जो केवल तथ्यों को ही

वास्तविक मानता है और जिसमें कल्पनात्मक राजनीतिक सिद्वान्त के महत्व को विज्ञानवाद के प्रति पागलपूर्ण सनक की शुल्क और बंजर बेदी बलिदान कर दिया जाता है।

- इसमें संदेह नहीं है कि व्यवहारवादी अवधारणा की अपनी विशेषताएं एवं त्रुटियॉ हैं लेकिन अध्ययन में अन्तःविषयक दृष्टिकोण का प्रयोग करके इसने राजनीति के अध्ययन क्षेत्रा को व्यापक अर्थबोध दिया है।
- संतुलित मूल्यांकन के रूप में यह कहा जा सकता है कि व्यवहारवादी अवधारणा चाहे विषय तत्वा का स्पष्टीकरण प्रस्तुत करने में सफल रहा हो या असफल यह समीक्षों के निजी निर्णय का प्रसंग है लेकिन निष्पक्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि नई प्रविधियों के साथ नये परिपेक्ष्यों के आलोक में विषय तत्वों की व्यवहारपरक मीमांसा प्रस्तुत करके इसने राजनीतिक व्याख्या राजनीतिक प्रक्रियाओं, राजनीतिक मुददों , घटनाओं समस्याओं पर तत्व भी मीमांसा ;डमजंचीलेपबंसद्ध अध्ययन प्रवृति का मार्ग प्रशस्त किया है। इस अवधारणा से संबंधित कृतियॉ ज्ञानबर्द्वक है और राजनीतिक व्यवहार के अनुभवाश्रित अध्ययन के लिए कापफी उपयोगी भी है।

<u>प्रश्न</u> ;फनमेजपवदद्ध

1- व्यवहारवाद से आप क्या समझते है? इसकी उत्पति के मुख्य कारणों को स्पष्ट करें।

What do your understand by Behaviouralism? Point outthe responsible factors of its origin.

2. व्यवहारवाद की मुख्य विशेषताएं क्या ह इसका मुख्य उद्वेश्य बताएं।

What are the main characteristics of Behaviouralism? Point out its main objectives.

3. व्यवहारवाद की मुख्य आलोचनाओं का वर्णन करें। व्यवहारवादी क्रान्ति क्या है।

What are the main critilisms leveled against Behaviouralism? What is the Behaviouralism Revolution?